कौन बनेगा पास विथ ऑनर

Hindi questionary for BK students

Book written by: BK Ramashankar

Published by: Shiv Baba Services Initiative

Main Website: www.shivbabas.org | **BK Google**: www.bkgoogle.org

Get free PDF books: shivbabas.org/books

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (11) खण्ड -{21}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1- यहाँ पहली बात कौन सी है ?

A- विष (विकार) छोड़ने की।
B- देह-अभिमान छोड़ने की।
C- एक दो को दुःख देने की।
D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 2- अब तुम जानते हो - हम आत्मा हैं, इस पुराने शरीर से क्या नहीं रखना है, यह तो विकारी संबंध हैं ना ?

A- लगाव
B- अटैचमेंट

C- मोह
D- लोभ

प्रश्न 3- तुम सब ब्राह्मण कुल की पालना करते हो, फिर किस की पालना करेंगें?

A- ईश्वरीय कुल की
B- विष्णु कुल की।
C- दैवी कुल की।
D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 4- निम्नलिखित में सही विकल्प नहीं है ?

A- किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी।
B- पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय,सच्चाई-सफाई, ये सब आ जाता है।
C- कोई भी विकार जब आता है तो पहले कर्म में आता है।
D- व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता।
E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 5- कौनसा वन्डरफुल खेल संगम पर ही चलता है ?

A- चटाबेटी का।

B- फारकती दिलाने का।

C- खेलपाल का।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- तुम्हें 100 परसेन्ट सर्वगुणों में सम्पन्न बनना है, दिल दर्पण में देखना है कि -

A- हम कहाँ तक पावन बने हैं ?

B- हम लक्ष्मी को वरने के लायक है ?

C- हमने कितने पाप किये और कितने पुण्य ?

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 7- विष्णु का राज्य क्षीरसागर में है।अर्थात् ?

A- घी की नदी बहती है।

B- जमुना के कण्ठे पर है।

C- सब पावन ही पावन है।

D- सम्पन्नता से भरपूर है।

प्रश्न सं 8- तुम बच्चे ज्ञान डांस करते हो इसलिए क्या कहा जाता है ?

A- पाना था सो पा लिया ।

B- सच तो बिठो नच।

C- रास- विलास करना।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 9- सतयुग में देवतायें कभी यज्ञ आदि नहीं रचते। परन्तु यह यज्ञ है....

A- राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।

B- राजस्व अविनाशी रुद्र अश्वमेथ ज्ञान यज्ञ।

C- अविनाशी राजस्व अश्वमेध रुद्र ज्ञान यज्ञ।

D- अविनाशी रूद्र राजस्व अश्वमेध ज्ञान यज्ञ।

प्रश्न सं 10- लौकिक बाप होते भी आत्मा पारलौकिक बाप को याद करती है,क्यों ?

A- क्योंकि दुःखी है।

B- क्योंकि आधा कल्प की आदत हो गई है।

C- क्योंकि वह सुख का सागर है।

D- उपरोक्त सभी।

प्रश्न सं 11- ..... वह है जो स्व -परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बनते हैं ?

A- विश्व कल्याणकारी
B- परोपकारी
C- विश्व सेवाधारी
D- स्व परिवर्तक

प्रश्न सं 12- पूज्य बनने का पुरुषार्थ क्या है?

A- विश्व को पावन बनाने की सेवा में मददगार बनना।
B- पूज्य और पुजारी के रहस्य को समझना।
C- लक्ष्मी-नारायण वा देवी- देवता के रूप में पूजे जाना।
D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 13- माया की.....से बचने के लिए बाप की शरण में आ जाओ ईश्वर की शरण में आने से 21 जन्म के लिए माया के बंधन से छूट जायेंगे

A- सजा
B- चालाकी

C- पीड़ा

D- दुःख

प्रश्न सं 14- हर वर्ष राखी बंधवाते हैं क्योंकि.....

A- वादा तोड़ देते हैं।

B- पवित्र नहीं रहते

C- हर वर्ष रावण को जलाते हैं।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 15- इनमें से कौन सा सही नहीं है ?

A- कांटे को कली, कली को फिर फूल बनाना है।

B- माया का तूफान आने से कलियां वा फूल झड़ जाते हैं।

C- सतयुग-त्रेता को योगेश्वर का राज्य कहा जाता है।

D- श्रीकृष्ण को योगेश्वर नहीं कह सकते।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 16- पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा..... है ?

A- व्रत

B- प्रॉपर्टी

C- श्रृंगार

D- गुण

भाग (11) खण्ड {21} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. A- विष या विकार छोड़ने की।

भागवत में भी मशहूर है - अमृत पीते-पीते ट्रेटर बन फिर सताते हैं। बाप को कितना ख्याल रहता है - यह फलाना कच्चा है, कोई भी समय ट्रेटर बन नुकसान कर सकता है। बरोबर देखते हैं ट्रेटर बन नुकसान करने लग पड़ते हैं फिर कितनी अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। और सतसंगों में अत्याचार होते हैं क्या? *यहाँ पहली बात है विष (विकार) छोड़ने की*। विष छोड़ते नहीं हैं।कहते भी हैं फलाना स्वर्ग पधारा।

उत्तर सं 2. C- मोह

कोई-कोई बिगर देखे सगाई कर लेते हैं फिर जब शक्ल देखते हैं तो कहते हैं हमको ऐसी काली नहीं चाहिए। फिर झगड़ा हो जाता है - हम पैसे को क्या करें, हमें तो सुन्दर

चाहिए। *अब तुम जानते हो - हम आत्मा हैं। इस पुराने शरीर से मोह नहीं रखना है। यह तो विकारी संबंध हैं ना।* दुनियावी बातों से अपनी बात न्यारी है। अभी तुम्हारी काली आत्मा की सगाई हुई है गोरे मुसाफिर से।

उत्तर सं 3. C- दैवी कुल की।

अब जड़ चित्र तो कुछ कर नहीं सकते, न वह समझते हैं परन्तु यह है भक्ति। तुम जानते हो वह पास्ट हो गये हैं। जगत अम्बा की महिमा है। एक तो नहीं है, *तुम सब ब्राह्मण कुल की पालना करते हो, फिर दैवी कुल की पालना करेंगे।* तुम इस समय जैसे कि सारे जगत की पालना करते हो परन्तु कोई जानते नहीं।

उत्तर सं 4. C- कोई भी विकार जब आता है तो पहले कर्म में आता है।

*A और D संकल्प की पवित्रता का रहस्य सभी को प्रैक्टिकल में लाना चाहिए ना। वैसे देखा जाये तो पांचों ही विकार, चाहे काम हो, चाहे मोह हो, सबसे नम्बरवन है काम और लास्ट में है मोह। लेकिन कोई भी विकार जब आता है तो पहले संकल्प में आता है। *व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा

करता है* तो काम अर्थात् व्यर्थ दृष्टि, *किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी।*

B. (पवित्रता, अन्तर्मुखता, निश्चयबुद्धि, सच्चाई-सफाई)। वास्तव में फाउण्डेशन है - पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। *पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफाई, ये सब आ जाता है।*

अर्थात A,B,D अव्यक्त मुरली 07.11.1995 के अनुसार सही हैं, इसलिए C सही नहीं है।

उत्तर सं 5. B- फारकती दिलाने का।

फारकती दिलाने का। राम, रावण से फारकती दिलाते हैं। रावण फिर राम से फारकती दिला देते। यह बड़ा वन्डरफुल खेल है। बाप को भूलने से माया का गोला लग जाता है इसीलिये बाप शिक्षा देते हैं - बच्चे, अपने स्वधर्म में टिको, देह सहित देह के सब धर्मों को भूलते जाओ। याद करने का खूब पुरुषार्थ करते रहो। देही-अभिमानी बनो।

उत्तर सं 6. A- हम कहाँ तक पावन बने हैं?

*तुम्हें 100 परसेन्ट सर्वगुणों में सम्पन्न बनना है, दिल

दर्पण में देखना है कि हम कहाँ तक पावन बने हैं* पतितों को पावन बनाने के लिए बाप श्रीमत देते हैं। यह श्रीमत देने वाला कौन है, उनको भी समझना चाहिए। वही बोलते हैं आत्माओं को। आत्मा जानती है मैंने इस शरीर से अच्छे कर्म किये हैं या बुरे कर्म किये हैं। बाबा तुम बच्चों को समझ देते हैं।

उत्तर सं 7. A- घी की नदी बहती है।

बाप से योग तोड़ नहीं देना है। सबका खिवैया वह बाप है। विषय वैतरणी की बड़ी खाड़ी है। उसे तुम योगबल से पार करते हो। विषय सागर से पार होकर तुम क्षीरसागर में चले जायेंगे। *विष्णु का राज्य क्षीरसागर में है अर्थात् घी की नदी बहती है।* यहाँ तो घासलेट की, रक्त की नदियां बहती हैं।

उत्तर सं 8. B- सच तो बिठो नच।

यहाँ *तुम बच्चे ज्ञान डांस करते हो इसलिए कहा जाता है सच तो बिठो नच,* (सच्चे हो तो खुशी में नाचते रहो) फिर तुम वहाँ जाकर रास-विलास करेंगे। मीरा भी ध्यान में रास आदि करती थी। परन्तु उसने भक्ति की।

उत्तर सं 9. A- राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।

जब तक ब्राह्मण न बने तब तक शिवबाबा से वर्सा मिल

न सके। शूद्र वर्सा ले न सकें। यह यज्ञ है ना। इसमें ब्राह्मण जरूर चाहिये। यज्ञ हमेशा ब्राह्मणों का ही होता है। शिव को रुद्र भी कहा जाता है। तो यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र शिवबाबा ने यह ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है। भक्ति पूरी होती है तो यज्ञ रचा जाता है। मनुष्य यज्ञ रचते हैं भक्ति मार्ग में। सतयुग में देवतायें कभी यज्ञ आदि नहीं रचते। परन्तु यह है *राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।* इस नाम से शास्त्रों में भी गायन है।

उत्तर सं 10. A- क्योंकि दुःखी है।

कोई भी मिलते हैं तो उनको यह बताना चाहिए कि दो बाप हैं - लौकिक और पारलौकिक। *दुःख में पारलौकिक बाप को ही याद करते हैं।* वह बाप अब आया हुआ है। मोस्ट बील्वेड शिवबाबा है। श्रीकृष्ण भी सबका मोस्ट बील्वेड है। परन्तु शिव-बाबा है निराकार और श्रीकृष्ण है साकार। श्रीकृष्ण को सबका बाप नहीं कहेंगे। वह है विश्व का मालिक। उनको भी बनाने वाला शिव है।

उत्तर सं 11. B- परोपकारी

परोपकारी वह है जो स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

करने के निमित्त बनते हैं। परोपकारी की परिभाषा सहज भी है और अति गुह्य भी है।

1. परोपकारी अर्थात् हर समय बाप समान हर आत्मा के गुणमूर्त्त को देखते। 2. परोपकारी किसी की भी कमज़ोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से सहयोग की कामना से अवगुण को देखते उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान देंगे। 3. परोपकारी अर्थात् सदा बाप समान स्वयं के खज़ानों को सर्व आत्माओं के प्रति देने वाले दाता रूप होंगे। 4. परोपकारी सदा स्वयं को खज़ानों से सम्पन्न बेगमपुर के बादशाह अनुभव करेंगे। बेगमपुर अर्थात् जहाँ कोई गम नहीं। संकल्प में भी गम के संस्कार अनुभव न हों।

उत्तर 4. 12- विश्व को पावन बनाने की सेवा में मददगार बनना।

पूज्य बनने के लिये *विश्व को पावन बनाने की सेवा में मददगार बनो।* जो जीव की आत्मायें बाप को मदद करती हैं उनकी बाप के साथ-साथ पूजा होती है। तुम बच्चे शिवबाबा के साथ सालिग्राम रूप में भी पूजे जाते हो, तो फिर साकार में

लक्ष्मी-नारायण वा देवी-देवता के रूप में भी पूजे जाते हो। तुमने पूज्य और पुजारी के रहस्य को भी समझा है।

उत्तर सं 13 C - *पीड़ा*

"माया की पीड़ा से बचने के लिए बाप की शरण में आ जाओ , ईश्वर की शरण में आने से 21 जन्म के लिए माया के बंधन से छूट जायेंगे " आधाकल्प माया से पीड़ित हो अभी तुमने आकर शरण ली है परमपिता परमात्मा की। मम्मा ने भी ली है।इस बाबा ने भी शरण ली है शिवबाबा की।

उत्तर सं 14 B - *पवित्र नहीं रहते*

कई तो अच्छी रीति समझ लेते हैं, कई नहीं समझते हैं, तो समझा जाता है - यह पावन दुनिया में चलने लायक नहीं हैं इसलिए श्रीमत पर नहीं चलते हैं। यह है ही आसुरी रावण सम्प्रदाय। रावण को हर वर्ष जलाते हैं ना। यह निशानी है। *हर वर्ष राखी भी बंधवाते हैं क्योंकि पवित्र नहीं रहते।* राखी बंधवाते हैं फिर अपवित्र बन पड़ते हैं इसलिए वर्ष-वर्ष राखी बंधवाते हैं। राखी है पवित्रता की निशानी। विकारियों को राखी भेज देते हैं कि प्रतिज्ञा करो हम पवित्र रहेंगे। पवित्र बनने से 21 जन्म राज्य-भाग्य पायेंगे।

उत्तर सं 15 D - *श्रीकृष्ण को योगेश्वर नहीं कह सकते।* अब फिर माया पर जीत पानी है। माया जीते जगत जीत। रावण से हार खाई तो डेविल बने, अब डीटी (देवता) बनना है। *कांटे को कली, कली को फिर फूल बनाना है। माया का तूफान आने से कलियां वा फूल झड़ जाते हैं।* मात-पिता का बनकर फिर फ़ारकती दे देते हैं।
यह भारत बिल्कुल ही पतित, भोगी हो गया है। योगी नहीं कहेंगे। *सतयुग-त्रेता को कहा जाता है योगेश्वर का राज्य। श्रीकृष्ण को योगेश्वर कहते हैं।* ईश्वर के साथ योग लगाकर पद पाना है। सो तुम पा रहे हो। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं।

उत्तर सं 16 C - *श्रृंगार*
पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, इसीलिए आपके चित्रों का कितना श्रृंगार करते हैं। यह पवित्रता का यादगार श्रृंगार है। पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता, काम चलाऊ पवित्रता नहीं। सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी

है। इसीलिए भक्त लोग भी एक दिन पवित्रता का व्रत रखते हैं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (11) खण्ड -{22}

प्रश्न सं 1- प्रतिज्ञा कमजोर होने का एक ही कारण है, एक ही शब्द है। सोचो, वह एक शब्द क्या है?

A- अभिमान

B- मैं

C- मेरापन

D- देहाभिमान

प्रश्न सं 2- विकर्म और विक्रमाजीत संवत् के विषय में इनमें से कौन सा सही नहीं है?

A- बस, बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम विकर्माजीत राजा बन जायेंगे।

B- विकर्माजीत राजा का संवत एक से शुरू हुआ फिर विक्रम संवत 2500 वर्ष बाद शुरू होता है।

C- विकर्माजीत और विक्रम भारतवासियों के दो संवत हैं।

D- विकर्माजीत का संवत सभी जानते हैं, विक्रम का संवत भूल गये हैं।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 3- शिक्षक डायरेक्ट परम आत्मा है! क्या शिक्षा दी?आपको क्या बना दिया?

A- त्रिनेत्री

B- त्रिकालदर्शी

C- त्रिलोकीनाथ

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 4- इनमें से कौनसा सही है ?

A- बुद्धि कहती है हम तो बाबा के साथ सुखधाम-शान्तिधाम जायें।

B- मुक्तिधाम में तो सदैव के लिए बैठना नहीं है।

C- पुराने बच्चों को मुक्तिधाम में जास्ती रहने कारण मुक्ति-धाम ही जास्ती याद पड़ेगा।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 5- इनमें से सही नहीं है-

A- सर्विस का शौक होगा तो विनाश के समय भी किसको ज्ञान देंगे।

B- पारलौकिक बाप का बनने से स्वर्ग का मालिक बनेंगे।

C- उठते-बैठते-चलते यह बुद्धि में रखना है - मैं आत्मा हूँ।

D- बाप आये ही हैं नर्क का विनाश कर स्वर्ग की स्थापना करने।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 6- ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी रॉयल्टी कौन सी है?

A- शान्ति

B- श्रृंगार

C- प्युरिटी

D- प्रेम

प्रश्न सं 7- बाप आये..... इसलिए इस नर्क से दिल न लगाओ, इनको भूलते जाओ। उचित वाक्य से रिक्त स्थान की पूर्ति करो ?

A- तुम्हें दुःखो से लिबरेट करने

B- तुम्हारे लिए स्वर्ग की नई दुनिया स्थापन करने

C- तुम्हें मुक्ति - जीवनमुक्ति का रास्ता बताने

D- गाइड बन सबको साथ ले जाने

प्रश्न सं 8- इनमें से सही नहीं है-

A- निराकार बाप को अथवा आत्मा को नहीं देखा जा सकता।

B- बैकुण्ठ के गेट बाप आकर खोलते हैं।

C- आत्मा के बाप को कहा जाता है अलौकिक बाप।

D- बाप कहते है- रहम तो सब पर करुँगा। सब बच्चों को पापों से मुक्त करता हूँ।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 9- एक हफ्ता बैठ समझें कि मनुष्य से देवता बनना है इसलिए बाप को कहा जाता है।

A- मुसाफिर

B- रत्नागर

C- सौदागर

D- जादूगर

प्रश्न सं 10- बाप फिर से कौनसे धर्म की सैपलिंग लगा रहे हैं ?

A- ब्राह्मण धर्म की

B- देवी-देवता धर्म की

C- क्षत्रिय धर्म की

D- तीनों

प्रश्न सं 11- इनमें से कौनसा सही नहीं है-

A- विनाश काल का समय है इसलिए देहधारियों से प्रीत जोड़ एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है।

B- इस पुराने घर से मोह नष्ट कर देना

C- ज्ञान की बुलबुल बन आप समान कांटों को फूल बनाने की सेवा करनी

D- याद की दौड़ लगानी है।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 12- ब्रह्मा बाबा शिव बाप की विशेष पसन्दगी क्या है?

A- पवित्रता

B- निश्चयबुद्धि

C- सच्चाई-सफाई

D- समर्पण

प्रश्न सं 13- नई सृष्टि में फिर नया जमाना स्वर्ग का होगा, अभी तो .....का जमाना है।

A- पुरानी दुनिया

B- पाप

C- नर्क

D- रावण

प्रश्न सं 14- अविनाशी बाप को याद करते ही आये हैं क्योंकि-

A- रावण राज्य में दुःख ही दुःख है।

B- मौत सामने खड़ा है।

C- सब मनुष्य आत्मायें कब्रदाखिल है।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 15- जो-जो आत्मायें पहले आती हैं, वह जीवनमुक्ति में हैं, पीछे फिर..... में आती हैं।

A- मुक्ति से जीवनमुक्ति में

B- जीवनमुक्ति से जीवनबन्ध में

C- निर्वाणधाम से सतयुग में

D- जीवन-मुक्ति से मुक्ति में

प्रश्न सं 16- मनुष्यों की कौन- सी चाहना एक बाप ही पूरी कर सकते हैं ?

A- शान्ति

B- सुख

C- पवित्रता

D- प्रेम

भाग (11) खण्ड {22} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 B - *`मैं'*

प्रतिज्ञा कमज़ोर होने का एक ही कारण है, एक ही शब्द है। सोचो, वह एक शब्द क्या है? *एक शब्द है - `मैं'।* अभिमान के रूप में भी `मैं' आता है और कमज़ोर करने में भी `मैं' आता है। मैंने जो कहा, मैंने जो किया, मैंने जो समझा, वही राइट है। वही होना चाहिए। यह अभिमान का `मैं'। मैं जब पूरा नहीं होता है तो फिर दिलशिकस्त में भी आता है, मैं कर नहीं सकता, चल नहीं सकता, बहुत मुश्किल है। एक

बॉडीकॉन्सेसनेस का `मैं' बदल जाए, `मैं' स्वमान भी याद दिलाता है और `मैं' देह-अभिमान में भी लाता है। मैं' दिलशिकस्त भी करता है और `मैं' दिलखुश भी करता है।

उत्तर सं 2 D - *विकर्माजीत का संवत सभी जानते हैं, विक्रम का संवत भूल गये हैं।*

बाप कहते हैं - सिर्फ मुझ बाप को याद करो। मैं आत्मा परमपिता परमात्मा का बच्चा हूँ। बस, *(A)* बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। *(B)* तुम विकर्माजीत राजा बन जायेंगे। विकर्माजीत राजा का संवत एक से शुरू हुआ फिर विक्रम संवत 2500 वर्ष बाद शुरू होता है। *(C)* विकर्माजीत और विक्रम, भारतवासियों के दो संवत हैं। *(D) विक्रम का संवत सभी जानते हैं, विकर्माजीत का संवत भूल गये हैं।* यह है पढ़ाई।

उत्तर सं 3 D - *त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ*

जब हमारा है तो नशा (फखुर) होना चाहिये ना? लेकिन कभी ऊंचा तो कभी मध्यम, कभी साधारण हो जाता है। सोचो,

हमारा बाप परम आत्मा है! और फिर शिक्षक डायरेक्ट परम आत्मा है! क्या शिक्षा दी? आपको क्या बना दिया? *त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ।* ऐसी कोई पढ़ाई पढ़ता है! अभी तक ये डिग्री सुनी है? जज बैरिस्टर, डॉक्टर, इंजीनियर ये तो सब डिग्रीज देखी हैं लेकिन त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, नॉलेजफुल....ऐसी डिग्री देखी है? द्वापर से कलियुग तक किसको मिली है? आपको मिली थी?

उत्तर सं 4- B - *मुक्तिधाम में तो सदैव के लिए बैठना नहीं है।*

(A) यहाँ तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। तुम्हारा लौकिक सम्बन्ध कोई है नहीं। *बुद्धि कहती है हम तो बाबा के साथ मुक्तिधाम-शान्तिधाम जायें।* सवेरे उठ ऐसे-ऐसे बैठ विचार सागर मंथन करना चाहिए।

(B) दु:खधाम की गली से तो तुम जन्म-जन्मान्तर पास कर आये हो। अब बुद्धि कहती है मुक्ति-जीवनमुक्ति तरफ जायें। *मुक्तिधाम में तो सदैव के लिए बैठना नहीं है।* ऐसे

नहीं, हम पार्ट से छूट जायें, आयें ही नहीं। पार्ट से छूटना नहीं हो सकता।

(C) मुक्ति को तो याद करना पड़े ना। *पिछाड़ी वालों को मुक्तिधाम में जास्ती रहने कारण मुक्ति-धाम ही जास्ती याद पड़ेगा।* तुमको जीवनमुक्तिधाम याद पड़ता है। स्वर्ग में हम जल्दी जायें।

उत्तर सं 5- A - *सर्विस का शौक होगा तो _विनाश_ के समय भी किसको ज्ञान देंगे।*

(A) शिवबाबा बेहद का बाप है, वही वर्सा देंगे। *सर्विस का शौक होगा तो _मरने_ समय भी किसको ज्ञान देंगे।* ऐसे नहीं, हॉस्पिटल में पड़े रहें और मुख बन्द हो जाए। मुख से कुछ न कुछ निकलता रहे। कितनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए।

(B) लौकिक सम्बन्ध से जीते जी मरना है। *पारलौकिक बाप का बनने से स्वर्ग का मालिक बनेंगे।* यहाँ तो नर्क के मालिक बनते हैं।

(C) *उठते-बैठते-चलते यह बुद्धि में रखना है - मैं आत्मा हूँ।* बाप की मत पर चलना है। शिवबाबा मत दे रहे हैं - अपने को आत्मा समझो।

(D) *बाप आये ही हैं नर्क का विनाश कर स्वर्ग की स्थापना करने।* हम आपको भी राय देते हैं, श्री श्री से मिली हुई श्रीमत हम आपको भी देते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे।

उत्तर सं 6- C - *प्युरिटी*

ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है! डायरेक्ट भगवान ने आपके ब्राह्मण जीवन में पर्सनैलिटी और रॉयल्टी भरी है। ब्राह्मण जीवन का चित्रकार कौन? स्वयं बाप। *ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी रॉयल्टी कौन सी है? प्युरिटी। प्युरिटी ही रॉयल्टी है।* है ना! ब्राह्मण आत्मायें सभी जो भी बैठे हो तो प्युरिटी की रॉयल्टी है ना!

उत्तर सं 7- B - *तुम्हारे लिए स्वर्ग की नई दुनिया स्थापन करने*

“बाप आये हैं *तुम्हारे लिए स्वर्ग की नई दुनिया स्थापन करने*, इसलिए इस नर्क से दिल न लगाओ, इनको भूलते जाओ" बाप कहते हैं - लाडले बच्चे, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग स्थापन कर रहा हूँ, तुम फिर नर्क से दिल क्यों लगाते हो? अब नर्क को भूल जाओ। मुझ बाप और स्वर्ग को याद करो, पुरानी दुनिया को भूलते जाओ। यह है बेहद का संन्यास। पुरानी देह सहित जो कुछ भी देखते हो, उनका भी ममत्व छोड़ो।

उत्तर सं 8- C - *आत्मा के बाप को कहा जाता है अलौकिक बाप।*

(A) *निराकार बाप को अथवा आत्मा को नहीं देखा जा सकता।* परमपिता परमात्मा प्राण दाता, जो दिव्य चक्षु विधाता है, उनको कहा जाता है ओ गॉड फादर, क्रियेटर।

(B) मुक्ति-जीवनमुक्ति के गेट्स खुलने हैं। हरी का द्वार कहते हैं ना। हरी कहा जाता है श्रीकृष्ण को, उनका द्वार है बैकुण्ठ। *बैकुण्ठ के गेट बाप आकर खोलते हैं।*

इस शरीर के बाप को कहा जाता है लौकिक बाप।

(C) *आत्मा के बाप को कहा जाता है पारलौकिक बाप। * जो सभी का एक ही है। पुकारते भी हैं ना - “ओ गॉड फादर, ओ पतित पावन, रहमदिल।" यह आत्मा ने पुकारा बाप को।

(D) सतयुग में माया होती नहीं। अभी कहते हैं - ओ गॉड फादर रहम करो। *बाप कहते हैं - रहम तो सब पर करुँगा। सब बच्चों को पापों से मुक्त करता हूँ* अर्थात् पतित दुनिया से लिबरेट करता हूँ।

उत्तर सं 9- D - *जादूगर*

राजाई के लिए तुम पढ़ रहे हो। एम ऑब्जेक्ट बुद्धि में है। नया तो कोई समझ न सके, जब तक कि कोई बैठ उनको समझावे। *एक हफ्ता बैठ समझें कि मनुष्य से देवता बनना है इसलिए बाप को जादूगर कहा जाता है।* ज्ञान रत्नों से मनुष्य को देवता बनाता हूँ।वैसे बाप को रत्नागर, सौदागर, मुसाफिर भी कहते हैं। पर मुरली महावाक्य अनुसार यहां विकल्प जादूगर ही सही है।

उत्तर सं 10- B - *अब बाप बैठ देवी-देवता धर्म का सैपलिंग लगाते हैं।*

बाप ने सैपलिंग लगाना शुरू किया है। आगे जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट थी तो कभी अखबार में नहीं पड़ता था कि झाड़ों का सैपलिंग लगाते हैं। *अब बाप बैठ देवी-देवता धर्म का सैपलिंग लगाते हैं,* और कोई सैपलिंग नहीं लगाते। बहुत धर्म हैं, देवी-देवता धर्म प्राय: लोप है। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट होने के कारण नाम ही उल्टा-सुल्टा रख दिया है।

उत्तर सं 11- A - *विनाश काल का समय है इसलिए देहधारियों से प्रीत _जोड़_ एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। *

मुरली महावाक्य अनुसार विनाश काल का समय है इसलिए *देहधारियों से प्रीत तोड़_ एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है।* इसके अतिरिक्त अन्य विकल्प सही है। इस पुराने घर से मोह नष्ट कर देना।ज्ञान की बुलबुल बन आप समान कांटों को फूल बनाने की सेवा करनी है। याद की दौड़ लगानी है।ना है।ज्ञान

की बुलबुल बन आप समान कांटों को फूल बनाने की सेवा करनी है। याद की दौड़ लगानी है।

उत्तर सं 12- A - *पवित्रता*

ब्रह्मा बाबा शिव बाप की विशेष पसन्दगी क्या है? (पवित्रता, अन्तर्मुखता, निश्चयबुद्धि, सच्चाई-सफाई)। वास्तव में फाउण्डेशन है - *पवित्रता।* लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफ़ाई, ये सब आ जाता है। लेकिन बापदादा देखते हैं कि पवित्रता की गुह्य भाषा, पवित्रता का गुह्य रहस्य अभी बुद्धि में पूरा स्पष्ट नहीं है।

उत्तर सं 13- C - *नर्क*

मैं जो सृष्टि अथवा जमाना रचता हूँ तो क्या दु:ख देने के लिए? मैं तो रचता हूँ सुख देने के लिए। परन्तु यह ड्रामा सुख दु:ख का बना हुआ है। मनुष्य कितने दु:खी हैं। बाप समझाते हैं कि जब नया जमाना, नई सृष्टि होती है, तो उसमें सुख होता है। दु:ख पुरानी सृष्टि में होता है।...तुम नई दुनिया के

लिए, नये धर्म की स्थापना के लिए नई बातें सुनते हो - परमपिता परमात्मा से, जो सृष्टि को भी पावन बनाते हैं। तुमको भी नया बनाते हैं। *नई सृष्टि में फिर नया जमाना स्वर्ग का होगा, अभी तो नर्क का जमाना है।* तुम नर्क के जमाने में हो।

उत्तर सं 14- A - *रावण राज्य में दु:ख ही दु:ख है।*

वह लौकिक फादर तो शरीर का है, यह है आत्माओं का बाप। आत्मा बुलाती है ओ परमपिता परमात्मा। *अविनाशी बाप को याद करते ही आये हैं क्योंकि रावण राज्य में दु:ख ही दु:ख है।* जब से रावण राज्य शुरू होता है तब से याद करना शुरू होता है। याद तो बाप को ही करना है क्योंकि वर्सा बाप से ही मिलता है।

उत्तर सं 15- B - *जीवनमुक्ति से जीवनबन्ध*

नयन-हीन को राह दिखाओ प्रभु, बुद्धि ऊपर चली जाती है परमपिता तरफ। जबकि सब राज़ बताने वाला वह परमपिता परमात्मा ही है। निर्वाणधाम को मुक्तिधाम कहा जाता है।

जो-जो आत्मायें पहले आती हैं वह जीवनमुक्ति में हैं, पीछे फिर जीवनमुक्ति से जीवनबन्ध में आती हैं। बच्चे जानते हैं पवित्रता, सुख, शान्ति है ही सतयुग में, जबकि एक राज्य होता है। उसको ही अद्वेत राज्य कहा जाता है। फिर द्वेत राज्य अर्थात् डेविल का राज्य होता है।

उत्तर सं 16- A - *शान्ति*

जब भी तुम अपनी निराकार दुनिया में जाते हो तो शांत रहते हो। निर्वाण, वाणी से परे। वहाँ तुम शांत में रहते हो। शांति का धाम वो है। *तो सर्व को शांति भी देने वाला वो एक है अर्थात मनुष्यों की शान्ति- की चाहना एक बाप ही पूरी कर सकते हैं।* ये मनुष्य थोडे ही दे सकता है, जो अशांत है, पतित है और भ्रष्टाचारी है।... .जो नहीं मानने वाले होते है उसको यहाँ अलाउ ही नहीं है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (12) खण्ड -{23}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- अभी आप ऐसे खुशबूदार वा आकर्षण मूर्त बनते हो तब आपके यादगार मन्दिर में भी ..... आदि से खुशबू करते हैं ?

A- फूल-माला

B- धूप बत्ती

C- गुलाब

D- अगरबत्ती

प्रश्न सं 2- कोई को क्या नशा, कोई को क्या नशा रहता है - मैं फलाना हूँ, ऐसे हूँ.....इनको (ब्रह्मा को) भी नशा

था ना -

A- बड़ा व्यापारी

B- बड़ा जौहरी

C- बहुमूल्य रत्नों का जानकार

D- रत्नों का सौदागर

प्रश्न सं 3- अगर महारथी से भी ग़लती होती है तो उस समय वो महारथी नहीं.....?

A- प्यादा है

B- परवश है।

C- माया के वश है

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 4- इनमे से कौनसा सही नहीं है?

A- बाप कहते हैं कि मेरे से भी तुम्हारा जास्ती पार्ट है।

B- तुमने आलराउन्ड पार्ट बजाया है तो थके भी तुम होंगे इसलिए लिखा हुआ है - चरण दबाये हैं।

C- माया बड़ा चूहा है - आधाकल्प खाते-खाते भारत को कौड़ी जैसा बना दिया है।

D- सारे ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्ट है शिवबाबा का।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न 5- बापदादा आप सभी बच्चों को जब भी देखते हैं, मिलते हैं तो हर एक बच्चे के मस्तक में ..... चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं।

A- सितारा

B- डायमंड

C- लकीर

D- मणी

प्रश्न 6- सम्मेलन का अर्थ क्या है?

A. मधुबन में कान्फ्रेंस

B. बापदादा मिलन।

C. बाप और बच्चों का मिलन।

D. सर्व आत्माओं का मिलन।

प्रश्न सं 7- कर्म में धारण करने वाली कौन सी बात है, जिससे इस सफलता के स्वरूप को प्रैक्टिकल में ला सकते हो ?

A. साक्षीपन

B. प्युरिटी

C. साक्षात्कार मूर्त

D. धारणामूर्त

प्रश्न सं 8- इनमें से कौनसा सही नहीं है ?

A. याद से बुद्धि सोने का बर्तन बन जाती है, जिसमें धारणा होती है।

B. ऐसे समझो कि बाप अन्तर्यामी है।

C. ऐसे नहीं, सिर्फ एक जगह बैठ याद करना है। चलते-फिरते भोजन खाते

भी बाप को याद करो।

D. उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 9- तुम हो लाइट हाउस। सबको ठिकाने पर लगाने वाले। तुम कैसे अच्छे लाइट हाउस बनते हो।
तुम..... हो।

A. सर्जन भी हो

B. सर्राफ भी हो

C. धोबी भी हो

D. A,B, C

E- A और C

प्रश्न सं 10- महारथी बनने लिए कौन सी बातें याद रखना है ?

A. अपने को सदैव साथी के साथ रखो।

B. साथी और सारथी, वह है महारथी।

C. सदा बाप का साथ, वह महारथी

D. A और B

E. A और C

प्रश्न सं 11- शक्ति वा ....की सूरत ऐसी देखाई दे जो कोई भी आसुरी लक्षण वाले हिम्मत न रख सके।

A. देही अभिमानी

B. पाण्डवों

C. शूरवीरता

D- दिव्यता

प्रश्न सं 12- यह बुद्धि में याद रहे - हम अभी पुरूषोत्तम संगमयुग पर पुरूषोत्तम बन रहे हैं। और यह जो..... है, उनसे बाबा हमको छुटकारा दिलाने आया है।

A. माया का जाल

B. विकारों का भूत

C. लोहे की जंजीरें

D. रावण का पिजड़ा

प्रश्न सं 13- पिछाड़ी में आने वाले जो ऊंच पद पाते हैं उसका आधार .....

A. ज्ञान

B. याद

C. धारणा

D. सेवा

E. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 14- माला के मणके कौन सी विशेषता से बनते हैं?

A. एकमत होकर एक ही धागे में पिरोये जाते हैं।

B. एक ही मत पर चलने वाले और आपस में भी एकमत हो

C. एक जैसे मणके हैं तो एक धागे में पिरोये जाते हैं।

D. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 15- अपने को मिटाना अर्थात्.....?.

A. अपने पुराने संस्कारों को मिटाना।

B. पुराने संस्कार ही सर्व के सहयोगी बनने में विघ्न डालते हैं।

C. दूसरे का संस्कार मिटाने के लिए नहीं कह रहे हैं।

D. अपने संस्कार मिटायेंगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगें।

प्रश्न सं 16- इनमे से कौनसा सही नहीं है ?

A. औरों से ममत्व मिटा दो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।

B. सबसे अच्छा पानी तो तालाब का होता है।

C. पढ़ेंगे-लिखेंगे होंगे विश्व के मालिक, नहीं तो कम पद।

D. उपरोक्त सभी सही है।

भाग (12) खण्ड {23} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 D - *अगरबत्ती*

सदा स्मृति रहे कि हम भगवान के बगीचे के रूहानी गुलाब हैं। रूहानी गुलाब अर्थात् कभी भी रूहानियत से दूर होने वाले नहीं। जैसे फूलों में खुशबू समाई हुई होती है, ऐसे आप सबमें रूहानियत की खुशबू ऐसी समाई हुई हो जो ऑटोमेटिक चारों ओर फैलती रहे और सबको अपनी ओर आकर्षित करती रहे।

अभी आप ऐसे खुशबूदार वा आकर्षण मूर्त बनते हो तब आपके यादगार मन्दिर में भी अगरबत्ती आदि से खुशबू करते हैं।

उत्तर सं 2 B - *बड़ा जौहरी*

हर एक को नशा तो रहता है ना। अभी बिड़ला है, उनको अपने धन का नशा होगा। समझेंगे – मैं सबसे साहूकार हूँ। परन्तु तुम जानते हो – जो आज साहूकार हैं वह फिर गरीब बन जायेंगे। तुम्हारी और अन्य मनुष्यों की बुद्धि में रात-दिन का फ़र्क है। कोई को क्या नशा, *कोई को क्या नशा रहता है – मैं फलाना हूँ, ऐसे हूँ.....। इनको (ब्रह्मा को) भी नशा था ना – मैं बड़ा जौहरी हूँ।* अभी समझते हैं वह सभी नशे कौड़ी मिसल हैं।

उत्तर सं 3 B - *परवश*

जब जानते हो तो जानने वाला क्या, क्यों करेगा? वो जानता है कि ये इसलिए होता है। क्या का जवाब स्वयं ही बुद्धि में आयेगा कि माया के प्रभाव के परवश है। चाहे महारथी हो,

चाहे प्यादा हो। *अगर महारथी से भी ग़लती होती है तो उस समय वो महारथी नहीं है, परवश है।* तो परवश वाला कहाँ भी लहर में लहरा जाता है लेकिन आप उस रूप में देखते हो कि ये महारथी होकर कर रहा है! उस समय महारथी नहीं, परवश है।

उत्तर सं 4 E - *उपरोक्त सभी सही हैं।*

(A) सतयुग-त्रेता में तुम जब सुख भोगते हो तो उस समय बाप का कोई पार्ट नहीं। *बाप कहते हैं कि मेरे से भी तुम्हारा जास्ती पार्ट है।* तुम सुख में रहते हो तो मैं निर्वाणधाम में हूँ। मेरा कोई पार्ट ही नहीं।

(B) तुमने आलराउन्ड पार्ट बजाया है तो थके भी तुम होंगे इसलिए लिखा हुआ है – चरण दबाये हैं। बाप कहते हैं – बच्चे, तुम थक गये होंगे। तुमने आधाकल्प भक्ति की, दर-दर धक्के खाये हैं।

(C) कोई को पता नहीं है हमारा दुश्मन कौन है? हम कंगाल कैसे बने? *माया बड़ा चूहा है – आधाकल्प खाते-

खाते भारत को कौड़ी जैसा बना दिया है।* बड़ा ही बलवान है।

(D) तुम तो जानते हो आत्मा किस देश से आई है? क्यों आई है? सारा चक्र बुद्धि में है। *सारे ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्ट है शिवबाबा का।* शिवबाबा के साथ पार्टधारी कौन-कौन हैं? पहले-पहले जन्म देते हैं – ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को फिर तुम बच्चों को। तुम बाप के साथ मददगार ठहरे।

उत्तर सं 5 - *सितारा*

तो बापदादा देख रहे थे कि मेरे बच्चों का कितना बड़ा भाग्य का *सितारा* हर एक के मस्तक पर चमक रहा है। ऐसा भाग्य का सितारा आपको अपने में दिखाई देता है? सदा चमकता हुआ दिखाई देता है या कभी बहुत अच्छा चमकता है और कभी सितारे की चमक कम हो जाती है? यह भाग्य का सितारा विचित्र सितारा है। तो बापदादा आप सभी बच्चों को जब भी देखते हैं, मिलते हैं तो हर एक बच्चे के मस्तक में सितारा चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं।

उत्तर सं 6- D - *सर्व आत्माओं का मिलन*

सम्मेलन कर रहे हो। सम्मेलन का अर्थ क्या है? *सर्व आत्माओं का मिलन।* सर्व आत्माओं का मिलन किससे करायेंगे? *बाप से।* सम्मेलन का हर कार्य करते भी यह कभी नहीं भूलना कि हम विश्व के आगे साक्षात्कारमूर्त हैं। साक्षात्कार मूर्त बनने से आप के द्वारा बापदादा का साक्षात्कार स्वत: ही होगा।

उत्तर सं 7- A - *साक्षीपन*

मुख्य एक बात ध्यान में रखने और कर्म में धारण करने वाली कौन सी है, जिससे इस सफलता स्वरुप को प्रैक्टिकल में ला सकते हो? वह कौन सी बात है? बहुत सहज है। मुश्किल बात को ध्यान देकर धारण करते हैं और सहज बात को छोड़ देने से सहज की धारणा देरी से होती है। यह मालूम है? समझा जाता है यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। हो जाएगी। फिर होता क्या है? हो जाएगी, हो जाएगी करते-करते ध्यान से निकल जाती है। इसलिए धारणा रूप भी नहीं होते। तो वह कौन-सी एक बात है। अगर उस बात को धारण कर लें तो

सफलता स्वरूप बन सकते हैं। *(साक्षीपन) हाँ यह बात ठीक है।*

उत्तर सं 8- B - *ऐसे समझो कि बाप अन्तर्यामी है।*

मुख्य है याद, इसमें विघ्न पड़ते हैं। *(A) याद से बुद्धि सोने का बर्तन बन जाती है, जिसमें धारणा होती है।* कहावत है शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ठहरता है। इस बाप के ज्ञान धन के लिए भी सोने का बर्तन चाहिए। वह तब होगा जब याद की यात्रा में रहेंगे। याद नहीं करेंगे तो धारणा नहीं होगी। *(B) ऐसे मत समझो कि बाप अन्तर्यामी है।* कुछ बोला और हुआ – यह तो भक्ति मार्ग में होता है। बाप को याद करना है फिर खुद को भी आत्मा समझ कुछ न कुछ उनकी आत्मा को भी याद करना है। यह जैसे सर्च लाइट देना होता है। *(C) ऐसे नहीं, सिर्फ एक जगह बैठ याद करना है। चलते-फिरते भोजन खाते भी बाप को याद करो।* दूसरे को करेन्ट देना है

उत्तर सं 9-. D. A,B, C

तुम हो लाइट हाउस। सबको ठिकाने पर लगाने वाले। तुम कैसे अच्छे लाइट हाउस बनते हो। ऐसी कोई बात नहीं जो तुमसे लागू न होती हो। *तुम सर्जन भी हो, सर्राफ भी हो, धोबी भी हो।* सभी खूबियां (विशेषतायें) तुम्हारे में आ जाती हैं। महिमा तुम्हारी भी हो जाती है, परन्तु नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार।

उत्तर सं 10-D. A और B दोनों सही

महारथी बनने लिए सिर्फ दो बातें याद रखो। कौन सी? *एक तो अपने को सदैव साथी के साथ रखो। साथी और सारथी, वह है महारथी।* पुरुषार्थ में कमजोरी के दो कारण हैं। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अगर बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो जहाँ बापदादा साथ है वहाँ माया दूर से मूर्छित हो जाती है।

उत्तर सं 11. C. शूरवीरता

शक्ति वा शूरवीरता की सूरत ऐसी देखाई दे जो कोई भी आसुरी लक्षण वाले हिम्मत न रख सकें। लेकिन अभी

तक आसुरी लक्षण के साथ-साथ आसुरी लक्षण वाले कहाँ-कहाँ आकर्षित कर लेते हैं।

उत्तर सं 12. D. रावण का पिजड़ा

यह बुद्धि में याद रहे - हम अभी पुरूषोत्तम संगमयुग पर पुरूषोत्तम बन रहे हैं। और *यह जो रावण का पिंजड़ा है, उनसे बाबा हमको छुटकारा दिलाने आया है।* जैसे कोई पंछी को पिंजड़े से निकाला जाता है तो वह बहुत खुश होकर उड़कर सुख पाते हैं। तुम बच्चे भी जानते हो यह रावण का पिंजड़ा है, अनेक प्रकार के दु:ख ही दु:ख हैं। अब बाप आये हैं इस पिंजड़े से निकालने के लिए।

उत्तर सं 13- B - *याद*

याद के लिए बहुत एकान्त भी चाहिए। *पिछाड़ी में आने वाले जो ऊंच पद पाते हैं उसका आधार भी याद है।* उन्हें याद बहुत रहती है। याद से याद मिलती है। जब बच्चे बहुत याद करते हैं तो बाप भी बहुत याद करते हैं। वह कशिश करते हैं।

उत्तर सं 14- D - *उपरोक्त सभी*

माला के मणके कौन सी विशेषता से बनते हैं? मणकों की विशेषता यही है जो *(A) एकमत होकर एक ही धागे में पिरोये जाते हैं।* एक की ही लगन एकरस स्थिति और एकमत तो सब एक ही एक। *(C) एक जैसे मणके हैं तो एक धागे में पिरोये जाते हैं ना।* तो *(B) एक ही मत पर चलने वाले और आपस में भी एकमत हो।* संकल्प भी एक से। दो मत होती हैं तो वह दूसरी अर्थात् 16000 की माला के दाने बन जाते हैं। एक मत के लिए ऐसा वातावरण बनाना है।

उत्तर सं 15- A - *अपने पुराने संस्कारों को मिटाना*

सर्व का सहयोगी बनने के लिए अपने आप को मिटाना भी पड़ता है। इस कार्य से हटेंगे नहीं। तो *अपने को मिटाना अर्थात् अपने पुराने संस्कारों को मिटाना।* पुराने संस्कार ही सर्व के सहयोगी बनने में विघ्न डालते हैं। तो अपने पुराने संस्कारों को मिटाना है। दूसरे का संस्कार मिटाने के लिए

नहीं कह रहे हैं। अपने संस्कार मिटायेंगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगे।

उत्तर सं 16- B - सबसे अच्छा पानी तो तालाब का होता है।

भगवानुवाच – अपने को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो। *(A) औरों से ममत्व मिटा दो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।* फिर कभी बीमार होंगे नहीं। काल खायेगा नहीं। आयु भी बड़ी होगी। *(B)* रोज़ तुम स्नान करते हो, पानी तो सब जगह सागर से ही आता है। *सबसे अच्छा पानी तो कुएं का होता है।* नदियों में तो किचड़ा पड़ता रहता है। कुएं का पानी तो नेचुरल शुद्ध होता है। *(C)* इसमें जितना जो पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। *पढ़ेंगे-लिखेंगे होंगे विश्व के मालिक, नहीं तो कम पद।* परन्तु वह राजाई है सुख की। यहाँ है दु:ख की।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (12) खण्ड -{24}

प्रश्न सं 1- तख्त नशीन कब बनेंगे ?

A. जब अब समीप बनेंगे।

B. जितना जो समीप होगा उतना समानता में रहेगा।

C. तुम बच्चों के नैनों को कोई देखे तो उनको मुक्ति जीवन मुक्ति का रास्ता दिखाई दे।

D. ऐसा नयनों में जादू हो। तो आप के नैन कितनी सेवा करेंगे।

प्रश्न सं 2- बेहद का बाप मिला है उसकी याद में..... ?

A. अतीन्द्रिय सुख है।

B. सुख ही सुख है।

C. करामात है।

D. A और C

E. A,B, C

प्रश्न सं 3- सतयुग में रावण की एफीजी नहीं बनाई जाती क्यों ?

A. सब पावन होते हैं।

B. सब निर्विकारी होते हैं।

C. रावण का खात्मा हो जाता है।

D. सब अहिंसक होते हैं।

प्रश्न सं 4- तुम बच्चे जब बैठते हो, चलते फिरते हो तो बुद्धि में क्या याद रखो?

A. 84 का चक्र

B. नई पवित्र दुनिया

C. बाजोली का खेल

D. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 5- इनमें से कौनसा सही नहीं है?

A. 7 रोज़ में तुमको लायक ब्राह्मण-ब्राह्मणी बन जाना है।

B. पढ़ते-पढ़ाते नहीं हैं तो अन्दर में समझना चाहिए कि मैं पूरा पढ़ा नहीं हूँ, तब पढ़ा नहीं सकता।

C. जिनको शौक है, समझते हैं याद से ही हमारे पाप कटते हैं, वो अच्छी रीति पुरूषार्थ करते हैं।

D. उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 6- भाग्य का आधार ..... है, बिना ..... के भाग्य नहीं मिलता ?

A. त्याग

B. तपस्या

C. सेवा

D. मेहनत

प्रश्न सं 7- रूहानी अ्थॉरिटी के साथ निरहंकारी बन सत्य ..... का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले सच्चे सेवाधारी भव ?

A. बाप

B. ज्ञान

C. शिक्षक

D. सेवा

प्रश्न सं 8- सर्प का मिसाल भी सतयुग के लिए है। एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं, इसको कहा जाता है ?

A. बेहद का वैराग्य

B. जडजड़ीभूत

C. दैवी दुनिया

D. देही अभिमानी

प्रश्न सं 9- तुमको कोई दुःख के आँसू नहीं आने चाहिए, क्यों ?

A. बेहद का बाप मिला है।

B. सतयुग में जाएंगे

C. यह सच्चा ड्रामा है।

D. बनी बनाई बन रही

प्रश्न सं 10- सबसे जास्ती फिकर किस बात की रहती है ?

A. माया की

B. विकर्म विनाश करने की

C. बाप समान बनने की

D. बाप को याद करने की

प्रश्न सं 11- बाबा पूछते हैं कि तुम क्या बनेंगे ?

A. लक्ष्मी नारायण

B. सूर्यवंशी

C. देवी देवता

D. विश्व के मालिक

प्रश्न सं 12 - भगवान किन बच्चों को मिलता ?

A- जो भगवान को याद करते हैं

B- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है।

C- जो भगवान की सेवा करते हैं।

D- जो यह ज्ञान सुनते हैं।

प्रश्न 13- आत्माएँ निराकारी दुनिया में बाप के साथ रहती है, फिर यहाँ आकर क्या करती हैं..... ?

A- जन्म मरण के चक्र में फंस जाती हैं।

B- सुख दुःख भोगती हैं।

C- सतो रजो तमो का पार्ट बजाती हैं।

D- ज्ञान भक्ति वैराग्य में जाती हैं।

प्रश्न 14- बाप आकर जंगल को गार्डन ऑफ पलावर्स

बनाते हैं, इसलिए उनको क्या कहते हैं.?

A- माली

B- बागवान

C- बबुलनाथ

D- पतित पावन

प्रश्न 15 - किसकी पूजा करते करते नीचे गिरते आये हैं ?

A- मूर्तियों की

B- रावण की

C- भाइयों की

D- शास्त्रों की

प्रश्न 16- बाबा ने समझाया है, तुम सब कौन हो ?

A- पार्वतियां

B- द्रोपदी

C- अर्जुन

D- A और C

E- A, B और C

भाग (12) खण्ड {24} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. A. जब अब समीप बनेंगे।

तुम हरेक बच्चे को पुरुषार्थ करना है तख्त नशीन बनने का न कि तख्त नशीन के आगे रहने का। *तख्त नशीन तब

बनेंगे जब अब समीप बनेंगे।* जितना जो समीप होगा उतना समानता में रहेगा। तुम बच्चों के नैनों को कोई देखे तो उनको मुक्ति जीवन मुक्ति का रास्ता दिखाई दे। ऐसा नयनों में जादू हो।

उत्तर 2. E. A,B, C

A अपनी शांत स्वरूप स्थिति में स्थित तभी रह सकेंगे जब अंतर्मुखी बन निरन्तर *एक बाप की याद में रहेंगे और सर्व सम्बंधों का सुख एक बाप से लेते हुए अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहेंगे।*

B तुम व्यापारी हो बाप से कितना बड़ा व्यापार करते हो। *जितना बाप को जास्ती याद करेंगे उतना बाप से अथाह सुख पायेंगे।* तुमको कोई पूछे बोले वाह हम तो बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हैं।

C यह तो समझाया है कि मनुष्य को कभी भगवान नहीं कहा जाता। तो *अब जबकि बेहद का बाप मिला है, उसकी याद में ही करामत है।* जितना पतित-पावन बाप को

याद करेंगे, उतना पावन बनते जायेंगे।अर्थात तीनों ऑप्शन सही है।

उत्तर सं 3. C. रावण का खात्मा हो जाता है।

सतयुग में नया शरीर मिले तब सम्पूर्ण कहेंगे। फिर *रावण का खात्मा हो जाता है। सतयुग में रावण की एफीजी नहीं बनाई जाती है।* तो तुम बच्चे जब बैठते हो, चलते-फिरते हो तो बुद्धि में यह याद रहे। अब हमने 84 का चक्र पूरा किया है फिर नया चक्र शुरू होता है। वह है ही नई पवित्र दुनिया, नया भारत नई देहली।

उत्तर सं 4. D. उपरोक्त सभी

तुम बच्चे जब बैठते हो, चलते-फिरते हो तो बुद्धि में यह याद रहे। अब हमने *84 का चक्र* पूरा किया है फिर नया चक्र शुरू होता है। वह है ही *नई पवित्र दुनिया,* नया भारत नई देहली। बच्चे जानते हैं पहले जमुना का कण्ठा है, जहाँ पर परिस्तान बनना है। बच्चों को बहुत अच्छी रीति समझाया जाता है, पहले-पहले तो बाप को याद करो। भगवान बाप

पढ़ाते हैं। वही बाप टीचर गुरू है, यह भला याद रखो। बाबा ने यह भी समझाया था कि तुम *बाजोली खेलते* हो। वर्णों का चित्र भी बहुत जरूरी है। सबसे ऊपर है शिवबाबा फिर चोटी ब्राह्मण। यह समझाने के लिए बाबा कहते हैं। अच्छा यह बुद्धि में रखो कि हम 84 जन्मों की बाजोली खेलते हैं। अर्थात सभी ऑप्शन सही हैं।

उत्तर सं 5 D - *उपरोक्त सभी सही हैं।*

बाबा कहते हैं *(A) 7 रोज़ में तुमको लायक ब्राह्मण-ब्राह्मणी बन जाना है।* सिर्फ नाम का ब्राह्मण-ब्राह्मणी नहीं चाहिए। ब्राह्मण-ब्राह्मणी वह जिनके मुख में बाबा का गीता ज्ञान कण्ठ हो। *(B)* सर्विस का सबूत देना चाहिए, तब समझ में आयेगा कि यह ऐसा पद पायेगा। फिर वह कल्प-कल्पान्तर के लिए हो जायेगा। *पढ़ते-पढ़ाते नहीं हैं तो अन्दर में समझना चाहिए कि मैं पूरा पढ़ा नहीं हूँ, तब पढ़ा नहीं सकता।* बाबा कहते हैं पढ़ाने लायक क्यों नहीं बनते हो! *(C)* एवर तन्दरूस्त बनाने के लिए यह सब सिखाया जाता है। *जिनको शौक है, समझते हैं याद से ही हमारे पाप कटते

हैं, वो अच्छी रीति पुरूषार्थ करते हैं।* कोई तो लाचार टाइम पास कर रहे हैं। अपनी-अपनी जांच करनी है।

उत्तर सं 6 A - *त्याग*

हम जब विकारों का त्याग करते है तो देवताई संस्कार हमारे में आने लगते है... त्याग करना है तो उन बन्धनों का करो जिस कारण से आत्मा मैली हुई है, इसी त्याग में स्वर्णिम भाग्य समाया हुआ है। कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है इसलिए कहा गया है *भाग्य का आधार त्याग है, बिना त्याग के भाग्य नहीं मिलता।*

उत्तर सं 7- B - *ज्ञान*

रूहानी अथॉरिटी के साथ निरहंकारी बन सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले सच्चे सेवाधारी भव

जैसे वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथॉरिटी आ जाती है तो वृक्ष झुक जाता है अर्थात् निर्माण बनने की सेवा करता है। ऐसे रूहानी अथॉरिटी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथॉरिटी उतने

निर्माण और सर्व के स्नेही होंगे। अल्पकाल की अथॉरिटी वाले अंहकारी होते हैं लेकिन सत्यता की अथॉरिटी वाले अथॉरिटी के साथ निरंहकारी होते हैं - यही सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप है। सच्चे सेवाधारी की वृत्ति में जितनी अथॉरिटी होगी उसकी वाणी में उतना ही स्नेह और नम्रता होगी।

उत्तर सं 8- A - *बेहद का वैराग्य*

देवताओं को कभी काल नहीं खाता। वहाँ काल के जमघट होते नहीं। तो यह टॉपिक भी बहुत अच्छी है - मनुष्य काल पर विजय कैसे कर सकते हैं। यह सारी ज्ञान की बातें हैं। भारत अमरलोक था, कितनी बड़ी आयु थी। *सर्प का मिसाल भी सतयुग के लिए है। एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं, इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य।*

उत्तर सं 9. C. यह सच्चा ड्रामा है।

मनुष्यों को ही पता होता है ना कि यह बेहद का कर्मक्षेत्र है, जहाँ सभी आकर खेल करते हैं। बनी बनाई बन

रही... बाप कहते हैं बच्चे चिंता उनकी की जाए जो अनहोनी हो। हो गया सो ड्रामा में था फिर उनका चिंतन काहे का करें। हम ड्रामा को देखते हैं। ड्रामा में जब कोई ऐसा दर्दनाक सीन होता है तो मनुष्य देखकर रोते हैं। अब वह तो हुआ झूठा ड्रामा। *यह तो सच्चा ड्रामा है। सच-सच करते हैं। परन्तु तुमको कोई दु:ख के आंसू नहीं आने चाहिए।* साक्षी होकर तुमको देखना है। जानते हो यह ड्रामा है, इसमें रोने की क्या दरकार है। पास्ट इज़ पास्ट। कब विचार भी नहीं करना चाहिए।

उत्तर सं 10. D. बाप को याद करने की

बाप ने तुमको ही तुम्हारे 84 जन्मों की कहानी बताई है। सेन्सीबुल जो हैं वह हिसाब से समझ सकते हैं। इस्लामी आयेंगे तो एवरेज कितने जन्म लेंगे। एक्यूरेट हिसाब की तो दरकार नहीं। इन बातों में तो कोई फिकरात की बात नहीं। *सबसे जास्ती फिकर यह रहती है कि हम बाबा को याद करते रहें।* बस एक ही फिकर है, एक को याद करने का।

उत्तर सं 11. B. सूर्यवंशी

अब तुम समझते हो हम स्वर्ग के मालिक थे फिर 84 जन्म ले बिल्कुल शूद्र बुद्धि बन गये हैं। क्या हाल हो गया है। अब फिर पुरूषार्थ कर क्या बनते हो! *बाबा पूछते भी हैं ना कि तुम क्या बनेंगे? तो सब हाथ उठाते हैं सूर्यवंशी बनेंगे।* हम तो मात-पिता को पूरा फालो करेंगे। कम पुरूषार्थ थोड़े ही करेंगे। सारी मेहनत याद और आप समान बनाने पर है इसलिए बाप कहते हैं जितना हो सके सर्विस करना सीखो।

उत्तर 12. B- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है।

जिन्होंने शुरू से भक्ति की है उन्हें ही भगवान मिलता है। बाबा ने यह हिसाब बतलाया है कि सबसे पहले तुम भक्ति करते हो इसलिए तुम्हें ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलता है, जिससे फिर तुम नई दुनिया में राज्य करते हो। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प मुझे याद किया है अब मैं आया हूँ, तुम्हें भक्ति का फल देने।

*उत्तर 13.*C- सतो रजो तमो का पार्ट बजाती हैं।*

आत्माएं निराकारी दुनिया में रहती है फिर यहां आकर सतो रजो तमो में पार्ट बजाती आती है। चीज सतोप्रधान से रजो ,तमो में आना पड़ता है।पहले जब लोग मुक्तिधाम से आते हैं, तो सतोप्रधान होते हैं. फिर सतो, रजो, तमो में आते-आते, इस समय सब तमोप्रधान बन गए हैं. सब अपना-अपना हिसाब-किताब चुक्तू कर अंत में सतोप्रधान बनते हैं।जो भी धर्म स्थापक आते हैं, वह किसको सद्गति नहीं देते. वह सिर्फ अपना धर्म स्थापन कर फिर उसकी वृद्धि में लग जाते हैं. वे अपने ही धर्म में पुनर्जन्म लेते हैं और सतो, रजो, तमो में आते हैं।

उत्तर 14. *C. बबुलनाथ*

बाप समझाते है की फूल से ही सुगन्ध लेते हैं। कांटे से कब सुगन्ध लेते हैं क्या? यह है ही कांटों का जंगल। निराकार बाप कहते हैं मैं आकर गॉर्डन ऑफ फ्लावर बनाता हूँ, इसलिए बबुलनाथ नाम भी रखते हैं। बबुल कांटों को फ्लावर बनाते हैं इसलिए महिमा गाई जाती है - कांटों को फूल बनाने वाला नाथ।

उत्तर 15. *C- भाइयों की*

आत्मा कहती है मुझ निर्गुण हारे मे कोई गुण नाही। कोई भी देवता के मंदिर मे जायेंगे तो उनके आगे ऐसे कहेंगे। कहना चाहिए बाप के आगे। उसको छोड ब्रदर्स को पूजने लगते है, यह देवताये ब्रदर्स ठहरे ना ब्रदर्स से कुछ मिलना नही है। भाईयोंकी पूजा करते करते नीचे गिरते आये है।

उत्तर 16. *E* A,B और C सही

बाप समझाते हैं तुम सब पार्वतियां हो। शिव अमरनाथ तुमको कथा सुना रहे हैं। दूसरी कोई पार्वती है नहीं। अर्जुन भी एक नहीं, तुम सब अर्जुन हो। द्रोपदियां भी तुम सब हो। वह दुशासन हैं जो नंगन करते हैं। तब पुकारते हैं बाबा हमारी रक्षा करो। बाबा कहते हैं - बच्चे, नंगन कभी नहीं होना। दिखाते हैं ना जब द्रोपदी को नंगन कर रहे थे तो फिर श्रीकृष्ण ने उनको 21 चीर दिये। अब 21 साड़ी पहनी जाती हैं क्या? यह भी जैसे एक खेल दिखाते हैं। श्रीकृष्ण ऊपर से साड़ियां देते जाते हैं। अब 21 साड़ियां कैसे पहन सकेंगे? वास्तव में

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (13) खण्ड -{25}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- बुद्धि द्वारा निरंतर सत का संग करने से क्या बन जाएंगे ?

A- सच्चे सेवाधारी

B- शक्तिशाली

C- सहजयोगी

D- महारथी

प्रश्न सं 2- जो कभी माया के प्रभाव में ना आये ?

A- महावीर

B- महारथी

C- मायाजीत

D- माया प्रूफ

प्रश्न सं 3- कर्मों का हिसाब कब शुरू होता है ?

A- जब भगवान को भूल जाते

B- जब पतित बनते

C- गर्भ जेल में

D- जब बाबा का बनते

प्रश्न सं 4- दु:ख में सिमरण किसका करते है?

A- लोकिक बाप का

B- अलौकिक बाप का

C- पारलौकिक बाप का

D- A और C

प्रश्न सं 5- अब क्या होने वाला है ?

A. सारी दुनिया का विनाश

B. नई दुनिया की स्थापना

C. रावण का खात्मा

D. बेहद का दशहरा

प्रश्न सं 6- नेचुरल कैलेमिटीज आएंगी ..... के मुआफ़िक सब पिस कर खत्म हो जाएंगे ?

A. मच्छरों

B. सरसों

C. ताश के पत्तों

D. A और B

प्रश्न सं 7- सबसे बड़ा पाप कौनसा है ?

A. देहभान में आना

B. काम कटारी चलाना

C. हिंसा करना

D. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8- हम परिस्तान कहाँ बनाएंगे ?

A. भारत की भूमि पर

B. सतयुग की धरनी पर

C. पुराने कब्रिस्तान पर

D. नई दुनिया में

प्रश्न सं 9- पुराना चोला छोड़ हम कहाँ जाएंगे?

A- परमधाम

B- बैकुण्ठ में

C- विष्णुपुरी में

D- नई दुनिया में

प्रश्न सं 10- बाप हम बच्चों का क्या बनकर आया है ?

A. सर्वेन्ट

B. धोबी

C. सौदागर

D. रत्नागर

प्रश्न सं 11- भक्ति मार्ग में लक्ष्मी से दीपमाला पर क्या मांगते हैं ?

A. सुख समृद्धि

B. रिद्धि सिद्धि

C. विनाशी धन

D. वैभव

प्रश्न सं 12- यहाँ तुम जितना योग लगाएंगे उतना क्या बढ़ेगा ?

A. शक्ति

B. सुख

C. शान्ति

D. आयु

प्रश्न सं 13- आत्मा और शरीर पवित्र किससे बन जाएंगे?

A. बाप की याद से

B. विकारों को छोड़ने से

C. मनमनाभव होने से

D. सर्व सम्बन्ध बाप के जोड़ने से

प्रश्न सं 14- गऊ मुख कौन है?

A- ब्रह्माबाबा

B- शिवबाबा

C- बच्चे

D- A और C

प्रश्न सं 15- यह सारी दुनिया क्या है ?

A- छी- छी पतित

B- कब्रिस्तान

C- टापू

D- रावण राज्य

प्रश्न सं 16- तुम जगत अम्बा के कौन से बच्चे हो?

A- ज्ञान- ज्ञानेश्वरी

B- राज- राजेश्वरी

C- योग- योगेश्वरी

D- उपरोक्त सभी

भाग (13) खण्ड {25} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं १. C सहजयोगी

कोई भी कार्य करते बापदादा को अपना साथी बना लो तो डबल फोर्स से कार्य होगा और स्मृति भी बहुत सहज रहेगी क्योंकि जो सदा साथ रहता है उसकी याद स्वत: बनी रहती है। तो ऐसे साथी रहने से वा *बुद्धि द्वारा निरन्तर सत का संग करने से सहजयोगी बन जायेंगे* और पावरफुल संग होने के कारण हर कर्तव्य में आपका डबल फोर्स रहेगा, जिससे हर कार्य में सफलता की अनुभूति होगी।

उत्तर सं २. B महारथी

महारथी वह जो कभी माया के प्रभाव में परवश नही होते या हार नहीं खाते बापदादा कहते है कि महारथी बनने लिए सिर्फ दो बातें याद रखो। कौन सी? एक तो *अपने को

सदैव साथी के साथ रखो। साथी और सारथी, वह है महारथी।* पुरुषार्थ में कमजोरी के दो कारण हैं। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अगर बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो जहाँ बापदादा साथ है वहाँ माया दूर से मूर्छित हो जाती है।

उत्तर सं ३ - C गर्भ जेल में

संन्यासियों का है ही हठयोग, निवृति मार्ग। कर्म संन्यास तो कभी होता ही नहीं। वह तब हो जब आत्मा शरीर से अलग हो जाए। *गर्भ जेल में फिर कर्मो का हिसाब शुरू हो जाता है।* बाकी कर्म संन्यास कहना रांग है, गर्भ जेल में रहने के दौरान कर्म बन्धन के हिसाब-किताब का चूकतू करना होता है। जेल से और गर्भ जेल से शिव बाबा ही छुड़ाते हैं। *अभी जाते हैं गर्भ जेल में ।* वहाँ सतयुग में तो गर्भ महल होता है । वहाँ पाप तो करते नहीं जो सजा खानी पड़े । हिंदू धर्म की एक अवधारणा है.।इसे जेलबर्ड भी कहते हैं जो कार्य-कारण के सिद्धांत की व्याख्या करती है. इस सिद्धांत के मुताबिक,

पिछले हितकर कार्यों का हितकर और हानिकारक कार्यों का हानिकारक प्रभाव प्राप्त होता है।

उत्तर सं ४ - C - पारलौकिक बाप का

दु:ख में सिमरण उस पारलौकिक बाप का उत्तर हैं। अब वह बाप आया हुआ है। यहाँ तो एक बाप ही पढ़ाते हैं। यह भी समझाना चाहिए कि दो बाप हैं - लौकिक और पारलौकिक। *दु:ख में सिमरण उस पारलौकिक बाप का करते हैं।* जितना याद में रहेंगे, पवित्र बनेंगे उतना पारलौकिक मात-पिता की दुआयें मिलेंगी, दुआयें मिलने से तुम सदा सुखी बन जायेंगे।".अरे, तुम्हारा बाप से सदा योग नहीं लगा था? वो तुम्हारा लौकिक बाप, यह तुम्हारा पारलौकिक बाप । वो तुमको दु:ख देने वाला है।

उत्तर सं 5- D - *बेहद का दशहरा*

अब सभी दुर्गति में पड़े हैं। आगे तुम नहीं जानते थे तो रावण को क्यों जलाते हैं। *अब तुम जानते हो बेहद का दशहरा होने वाला है।* यह सारी दुनिया बेट (टापू) है। रावण

का राज्य सारी सृष्टि पर है। जो शास्त्रों में है बन्दर सेना थी, बन्दरों ने पुल बनाई... यह सब हैं दन्त कथायें।

उत्तर सं 6- B - *सरसों*

बाप समझाते हैं - यह सारी पुरानी दुनिया इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जायेगी। पुरानी दुनिया को आग लगने वाली है। *नेचुरल कैलेमिटीज आयेगी, सरसों मुआफिक सब पीस कर खत्म हो जायेंगे।* बाकी कुछ आत्मायें बच जायेंगी। आत्मा तो अविनाशी है।

उत्तर सं 7- B - *काम कटारी चलाना*

तुम इन आसुरी 5 विकारों पर योगबल से जीत पाते हो। बाकी कोई हिंसक लड़ाई की बात नहीं है। तुम कोई भी प्रकार की हिंसा नहीं करते हो। तुम किसको हाथ भी नहीं लगायेंगे। तुम डबल अहिंसक हो। *काम कटारी चलाना, यह तो सबसे बड़ा पाप है।* बाप कहते हैं - यह काम कटारी आदि-मध्य-अन्त दु:ख देती है। विकार में नहीं जाना है।

उत्तर सं 8- C - *पुराने कब्रिस्तान पर*

देखो, बेहद का बाप कैसा है! तुमको स्वर्ग रूपी घर बनाकर देता है। स्वर्ग है नई दुनिया। नर्क है पुरानी दुनिया। नई सो पुरानी सो फिर नई बनती है। नई दुनिया की आयु कितनी है, यह किसको पता नहीं है। अभी पुरानी दुनिया में रह हम नई बनाते हैं। *पुराने कब्रिस्तान पर हम परिस्तान बनायेंगे।* यही जमुना का कण्ठा होगा, इस पर महल बनेंगे।

उत्तर सं 9- D - *नई दुनिया में*

बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया से सिर्फ ममत्व मिटा दो। अब हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। *यह पुराना चोला छोड़ हम जायेंगे नई दुनिया में।* याद से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे, इतनी हिम्मत करनी चाहिए।

उत्तर सं 10- A - *सर्वेन्ट*

चलते-फिरते सिर्फ बाप को याद करो और कोई जरा भी तकलीफ नहीं देता हूँ। अब तुम्हारी एक सेकेण्ड में चढ़ती कला होती है। *बाप कहते हैं - मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट बनकर आया हूँ।* तुमने बुलाया है - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ तो सर्वेन्ट हुआ ना।

उत्तर सं 11- C - *विनाशी धन*

तुम हो जगत अम्बा के बच्चे ज्ञान-ज्ञानेश्वरी, फिर बनेंगी राज-राजेश्वरी। तुम बहुत धनवान बनते हो। फिर *भक्ति मार्ग में लक्ष्मी से दीपमाला पर विनाशी धन मांगते हैं।* यहाँ तुमको सब कुछ मिल जाता है आयुश्वान भव, पुत्रवान भव।

उत्तर सं 12- D - *आयु*

वहाँ 150 वर्ष आयु रहती है। *यहाँ तुम जितना योग लगायेंगे उतनी आयु बढ़ती जायेगी।* तुम ईश्वर से योग लगाकर योगेश्वर बनते हो।

उत्तर सं 13- C - *मनमनाभव होने से*

बाप कहते हैं मैं धोबी हूँ। सब मूत पलीती आत्माओं को साफ करता हूँ। फिर शरीर भी शुद्ध मिलेगा। मैं सेकेण्ड में दुनिया के कपड़े साफ कर लेता हूँ। *सिर्फ मनमनाभव होने से आत्मा और शरीर पवित्र बन जायेंगे।* छू मन्त्र हुआ ना। सेकेण्ड में जीवन-मुक्ति, कितना सहज उपाय है।

उत्तर सं 14- C - *बच्चे*

यहाँ गऊ मुख पर जाते हैं। वास्तव में *गऊ मुख तुम (बच्चे) चैतन्य में हो।* तुम्हारे मुख से ज्ञान अमृत निकलता है। गऊ से तो दूध मिलता है। पानी की तो बात ही नहीं, यह सब कुछ बाप बैठ समझाते हैं।

उत्तर सं 15- C - *टापू*

यह सारी दुनिया बेट (टापू) है। रावण का राज्य सारी सृष्टि पर है। जो शास्त्रों में है बन्दर सेना थी, बन्दरों ने पुल

बनाई... यह सब हैं दन्त कथायें। भक्ति आदि चलती है, पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति, फिर व्यभिचारी भक्ति।

उत्तर सं 16- A - *ज्ञान-ज्ञानेश्वरी*

किसको समझाओ - पहले स्थापना फिर विनाश। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। प्रजापिता मशहूर है आदि देव, आदि देवी... जगत अम्बा के लाखों मन्दिर हैं। कितने मेले लगते हैं। *तुम हो जगत अम्बा के बच्चे ज्ञान-ज्ञानेश्वरी हो*, फिर बनेंगी राज-राजेश्वरी।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (13) खण्ड -{26}

प्रश्न सं 1- सबकी बुद्धि में कौनसी एक बात है?

A- वेद- शास्त्रों का ज्ञान

B- स्प्रिचुअल बाप की नॉलेज

C- ईश्वर सर्वव्यापी

D- भक्ति मार्ग का ज्ञान

प्रश्न सं 2- सब भक्ति क्यों करते हैं?

A बाप से वर्सा लेने के लिए

B- मनुष्य मनुष्य की सुनने के लिए

C- वाद-विवाद नहीं करने के लिए

D- भगवान से मिलने के लिए

प्रश्न सं 3- कौन से खेल को जानने से कभी मूँझते नहीं ?

A- बाजोली का

B- दुःख- सुख का

C- भक्ति- ज्ञान का

D- A और B

E- B और C

प्रश्न सं 4- किसको तोड़ना है?

A- संस्कारों को

B- देह- अभिमान को

C- माया को

D- रावण को

प्रश्न सं 5- सतयुग में रूहानी बाप से वर्सा क्यों नहीं मिलता ?

A- क्योंकि सभी मनुष्य है

B- क्योंकि जिस्मानी बाप से मिलता है

C- लक्ष्मी- नारायण भी देहधारी है।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- भक्ति का फल क्या है?

A- सद्गति

B- भगवान

C- जीवनमुक्ति

D- ज्ञान

प्रश्न सं 7- बाप का परिचय कौन देता है?

A- स्वयं

B- बी. के.

C- ब्रह्माबाबा

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8-- बाप ज्ञान कब सुनाते हैं?

A- जब सब पतित बन जाते है।

B- संगम पर

C- जब पाप बहुत होते है।

D- जब नई दुनिया स्थापन करनी होती है।

प्रश्न सं 9- परमात्मा के साथ निरन्तर योग लगाओ तो क्या होगा ?

A- पाप नष्ट

B- सदा साथ का अनुभव

C- दैवी राज्य स्थापन

D- A और B

E- A, B, C

प्रश्न सं 10- ज्ञान, योग के साथ जीवन का आधार क्या है?

A- अष्ट शक्तियां

B- दैवी गुण

C- सृष्टि का आदि- मध्य- अन्त

D- धारणा और सेवा

प्रश्न सं 11- योग को अविनाशी योग क्यों कहते हैं ?

A- क्योंकि सारे विकर्म विनाश हो जाते हैं।

B- क्योंकि ईश्वर द्वारा सिखाया जाता है।

C- क्योंकि इससे सूर्यवंशी घराने की स्थापना होती है

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 12- किन तीनों का आपस में कनेक्शन है?

A- सेवा, ज्ञान, धारणा

B- ज्ञान, योग, धारणा

C- धारणा, योग, सेवा

D- ज्ञान,योग, सेवा

प्रश्न सं 13- देवताओं को क्या कहा जाता है ?

A- सर्वगुणसंपन्न

B- दैवी गुणों वाले मनुष्य

C- आत्मा

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न सं 14- परमात्मा से प्रीत बुद्धि किसकी है?

A- पाण्डवों की

B- शक्तियों की

C- यादवों की

D- Aऔर B

प्रश्न सं 15- यह अन्तिम जन्म है अब हम कहाँ जायेंगे ?

A- सतयुग में

B- नई दुनिया में

C- अपने घर

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 16- सतयुग में झाड़ कैसा होता है ?

A- छोटा

B- बड़ा

C- बहुत छोटा

D- A और C

भाग (13) खण्ड {26} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 C - *ईश्वर सर्वव्यापी*

भक्ति को अंग्रेजी में फिलासॉफी कहते हैं। टाइटल मिलते हैं डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी। अब फिलासॉफी (भक्ति) तो छोटे बड़े मनुष्य सब जानते हैं। *कोई से भी पूछो

ईश्वर कहाँ रहते हैं, तो कह देंगे सर्वव्यापी है।*..... वह सब भक्ति करते हैं भगवान से मिलने के लिए। परन्तु भगवान को जानते नहीं तो भक्ति से क्या फायदा होगा। बहुतों को यह टाइटिल मिलता होगा डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी, *उन्हों की बुद्धि में तो एक ही बात है कि ईश्वर सर्वव्यापी है।*

उत्तर सं 2 D - *भगवान से मिलने के लिए*

अब शास्त्रों की कोई भी बात बाप नहीं सुनाते। कोई भी भगत को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। न उनमें ज्ञान है, न ज्ञान सागर के बच्चे हैं। ज्ञान सागर बाप को कोई नहीं जानते हैं। न अपने को बच्चा समझते हैं। वह *सब भक्ति करते हैं भगवान से मिलने के लिए।* परन्तु भगवान को जानते नहीं तो भक्ति से क्या फायदा होगा।

उत्तर सं 3 E - *B और C*

दु:ख और सुख, भक्ति और ज्ञान का जो खेल चलता है, इसको यथार्थ रीति जानने वाले कभी मूँझते नहीं। तुम जानते हो भगवान किसी को दु:ख नहीं देता, वह है दु:ख हर्ता

सुख कर्ता। जब सभी दु:खी हो जाते हैं, तब दु:खों से लिबरेट करने के लिए वह आते हैं।समझाया जाता है - ज्ञान और भक्ति। वह है दिन, वह है रात। ज्ञान से सुख, भक्ति से दु:ख, यह खेल बना हुआ है।

उत्तर सं 4 B - *देह-अभिमान को*

लक्ष्मी-नारायण भी देहधारी हैं। उनके बच्चे जिस्मानी बाप से वर्सा पाते हैं। यह बात ही न्यारी है। सतयुग में भी जिस्मानी बात हो जाती है। वहाँ यह नहीं कहेंगे कि रूहानी बाप से वर्सा मिलता है। *देह-अभिमान को तोड़ना है।* हम आत्मा हैं और बाप को याद करना है। यही भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है।

उत्तर सं 5. C- लक्ष्मी- नारायण भी देहधारी है।

बाप कहते हैं ज्ञान की अथॉरिटी, ज्ञान सागर मैं हूँ। मैं तुमको कोई शास्त्र आदि नहीं सुनाता हूँ। हमारा यह है रूहानी ज्ञान। बाकी सब है जिस्मानी ज्ञान। वह सतसंग आदि सब भक्ति मार्ग के लिए हैं। यह रूहानी बाप बैठ रूहों को समझाते

हैं इसलिए देही-अभिमानी बनने में बच्चों को मेहनत लगती है। हम आत्मायें बाप से वर्सा लेती हैं। बाप के बच्चे जरूर बाप की ही गद्दी के वारिस होंगे ना। *लक्ष्मी-नारायण भी देहधारी हैं। उनके बच्चे जिस्मानी बाप से वर्सा पाते हैं।* यह बात ही न्यारी है। सतयुग में भी जिस्मानी बात हो जाती है। वहाँ यह नहीं कहेंगे कि रूहानी बाप से वर्सा मिलता है।

उत्तर 6. D- ज्ञान

भक्ति का फल ज्ञान तुमको भगवान से मिलता है। भगवान कोई भक्ति नहीं सिखलाते हैं। वह तो ज्ञान देते हैं। कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और कोई पावन बनने का रास्ता ही नहीं।

उत्तर सं 7. A- स्वयं

बाप कहते हैं कि मैं सबका उद्धार करने आता हूँ। मैं ही आकर रूहानी ज्ञान देता हूँ। *बाप अपना परिचय दे रहे हैं। मैं तुम्हारा बाप हूँ।* अभी यह है नर्क। नई दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है।

उत्तर सं 8. C- जब पाप बहुत होते है।

पहले वह पावन होते हैं फिर पतित बनते हैं। सतगुरू तो एक ही सद्गति दाता है। मनुष्य गुरू करते ही तब हैं जब सद्गति में जाना चाहते हैं। *जब पाप बहुत होते हैं तब रूहानी बाप ज्ञान सुनाते हैं।*

उत्तर सं 9. A- पाप नष्ट

यह तो हम जानते हैं कि सच्चा योग तो खुद परमात्मा ही सिखलाए सूर्यवंशी चन्द्रवंशी घराना व दैवी राज्य स्थापन करते हैं। अब वो प्राचीन योग परमात्मा आकर कल्प-कल्प हमें सिखलाते हैं। कहते हैं हे आत्मा मुझ परमात्मा के साथ निरन्तर योग लगाओ तो तुम्हारे *पाप नष्ट* हो जायेंगे।

उत्तर सं 10. B- दैवी गुण

“ज्ञान, योग और दैवी गुणों की धारणा जीवन का आधार है" इसमें पहले है योग अथवा ईश्वरीय निरंतर याद,

जिससे विकर्मों का विनाश होता है। दूसरा है ज्ञान माना इस सारे ब्रह्माण्ड, सृष्टि की आदि-मध्य-अन्त कैसे होती है, जब यह नॉलेज हो तब ही इस लाइफ में प्रैक्टिकल चेंज आ सकती है और हम भविष्य प्रालब्ध अच्छी बना सकते हैं। तीसरी प्वाइन्ट है - क्वालिफिकेशन तो हमको सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण अवश्य बनना है तब ही देवता बन सकते हैं।

उत्तर सं 11. B- क्योंकि ईश्वर द्वारा सिखाया जाता है।

यह ईश्वरीय योग भारत में प्राचीन योग के नाम से मशहूर है। इस योग को अविनाशी योग क्यों कहते हैं? *क्योंकि अविनाशी परमपिता परमात्मा (ईश्वर) द्वारा सिखाया गया है।* भल योग और मनुष्य आत्मायें भी सिखाती हैं इसलिये योगाश्रम वगैरा खोलते रहते हैं परन्तु वो प्राचीन योग सिखला नहीं सकते। अगर ऐसा योग होता तो फिर वो बल कहाँ!

उत्तर सं 12. B- ज्ञान, योग, धारणा

इस एक ही जन्म में ज्ञान बल, योग बल और दैवी गुणों की धारणा की जाती है। तीनों का आपस में कनेक्शन है - ज्ञान बिगर योग नहीं लग सकता और योग बिगर दैवी गुणों की धारणा नहीं होती, इन तीनों प्वाइन्ट पर सारी जीवन का आधार है, तब ही विकर्मों का खाता खलास हो अच्छे कर्म बनते हैं।

उत्तर सं 13. D- A और B

ज्ञान का सागर सिर्फ एक को कहा जाता है। दैवी गुण उनमें होते हैं, ज्ञान से होते हैं; परन्तु यह ज्ञान जो तुम बच्चों को अभी मिलता है, वो सतयुग में नहीं होता है । पीछे इनका जो फल है राज करना और जो दैवी गुण धारण करते हो, तो *इनमें दैवी गुण हैं, तुम खुद इनकी महिमा करते हो बरोबर । कहते हो सर्वगुण सम्पन्न हो, सोलह कला सम्पूर्ण हो।* ऐसे गाते हो ना। तो तुमको भी तो ऐसा ही बनना होता है ना। तो अपने से पूछना चाहिए- मेरे में सभी दैवी गुण हैं? या कोई भी आसुरी गुण है? आसुरी गुण है, तो निकाल देना चाहिए, तभी

देवता बनेंगे। अगर नहीं निकालते हैं तो भले देवता बनते हैं, परंतु कम दर्जे के।

उत्तर सं 14. A- पाण्डवों की

पाण्डवों की तरफ तो है परमपिता परमात्मा। *पाण्डव हैं विनाश काले प्रीत बुद्धि,* कौरव और यादव हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। जो परमपिता परमात्मा को मानते ही नहीं। (30.11.18)

तुम पाण्डव हो तो वो कौरव हैं, काँग्रेस है। तो आपस में दो भाई हो ना। *अभी तुम्हारी भी बाप से प्रीत बुद्धि है,* क्योंकि बाप ने आ करके तुमको अपना परिचय दिया है। तो गाया जाता है ना। वो तो कहते हैं- सर्वव्यापी है, तो प्रीत हो नहीं सकती है। (3.6.1965)

उत्तर सं 15. C- अपने घर

उनकी बुद्धि में रहेगा कि अब इस दुनिया में दूसरा जन्म हमें नहीं लेना है और न तो दूसरों को जन्म देना है। यह पाप

आत्माओं की दुनिया है, इसकी वृद्धि अब नहीं चाहिए। इसे विनाश होना है। हम इन पुराने वस्त्रों को उतार *अपने घर जायेंगे।* अब नाटक पूरा हुआ।

उत्तर सं 16. A- छोटा

बाप कितना सहज कर सुनाते हैं, परन्तु माया-रावण भुला देती है। अभी इस पुरानी

दुनिया का अन्त है। वह है अमरलोक, वहाँ काल होता नहीं। बाप को कहते हैं आओ साथ में हम सभी को ले चलो। तो काल ठहरा ना। *सतयुग में कितना छोटा झाड़ है!* अभी बहुत बड़ा झाड़ है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (14) खण्ड -{27}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- कौन से चित्र में सारी नॉलेज है ?

A- सृष्टि चक्र

B- गोले का

C- त्रिमूर्ति का

D- सीढी

प्रश्न सं 2- मनुष्य क्या कहते है ?

A- ड्रामा की भावी

B- ईश्वर की भावी

C- माया के तूफ़ान

D- थोड़े रोज है।

प्रश्न सं 3- शान्तिधाम में जाकर फिर कहाँ आना है ?

A- सुखधाम

B- नई दुनिया में

C- रामराज्य में

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 4- सतयुगी श्रेष्ठाचारी दैवी राज्य में कितने होंगे?

A- 9 लाख

B- 2 करोड़

C- 16108

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न 5- जितना समय नजदीक आता है, उतना क्या होता है ?

A- उमंग - उत्साह

B- खुशी

C- नशा

D- तीव्र पुरुषार्थ

प्रश्न 6- शिवबाबा कौन है?

A- आत्मा

B- परमात्मा

C- बिन्दी

D- B और C

प्रश्न 7- शिव ने कथा किसे सुनाई?

A- अर्जुन

B- द्रोपदी

C- पार्वती

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 8- निराकार परमात्मा का रिजर्व तन कौन सा है ?

A- ब्रह्मा तन

B- दादी गुलज़ार तन

C- संदेशी

D- A और B

E- A,B और C

प्रश्न 9- भगवान से सब क्या मांगते हैं ?

A- खुशी और आनन्द

B- सुख और शान्ति

C- पीस और प्रोसपर्टी

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 10- बाबा बाबा कहने से क्या याद आता है ?

A- शिवबाबा

B- स्वर्ग

C- वर्सा

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 11- गरीब का एक पैसा भी साहूकार के कितने रुपये के बराबर है ?

A- सौ

B- हजार

C- पदम्

D- करोड़

प्रश्न 12- किसका गायन है ?

A- सुदामा का

B- पाण्डवों का

C- शक्तियों का

D- चावल का

प्रश्न 13- योग में रह कोई से बात करेंगे तो उनको क्या होगा ?

A- बहुत उमंग- उत्साह होगा

B- खुशी में रहेंगें

C- कशिश होगी

D- विकर्म विनाश होंगे

प्रश्न 14- आत्मा पार्ट में आते भी किस रूप में आ जाती है ?

A- न्यारेपन

B- पार्टधारी

C- कर्मबन्धन में

D- सर्वगुणसम्पन्न

प्रश्न 15- आत्मा और परमात्मा में सिर्फ किसका फर्क है ?

A- प्रवेशता का

B- गुणों का

C- महिमा का

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 16- हर सब्जेक्ट में फुल मार्क्स जमा करने के लिए कौनसा गुण धारण करो ?

A- सहनशीलता का

B- गम्भीरता का

C- निश्चिन्तता का

D- निर्भयता का

भाग (14) खण्ड {27} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1. D- सीढी

बाप बच्चों से पूछते हैं कि तुम यहाँ जब आते हो तो इन लक्ष्मी-नारायण के और सीढ़ी के चित्र को देखते हो? जब दोनों को देखा जाता है तो एम ऑब्जेक्ट और सारा चक्र बुद्धि में आ जाता है कि हम देवता बनकर फिर ऐसे सीढ़ी उतरते आये हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों को ही मिलता है। तुम हो स्टूडेन्ट। एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ा है। कोई भी आये तो उनको समझाओ - यह एम ऑब्जेक्ट है। इस पढ़ाई से यह देवी-देवता जाकर बनते हैं। फिर 84 जन्म की सीढ़ी उतरते हैं, फिर रिपीट करना है।

सीढ़ी में सारी नॉलेज आ जाती है। जैसे यह कुम्भकरण वाला चित्र है। तो यह ऐसा बनाना चाहिए - बी.के. ज्ञान अमृत पिलाती हैं, वे विष (विकार) मांगते हैं। बाबा मुरली में सब डायरेक्शन देते रहते हैं। हर एक चित्र की समझानी बड़ी अच्छी है।

उत्तर 2. B- ईश्वर की भावी

बाबा ने भी जो कहा सो ड्रामा अनुसार कहा। ड्रामा में मेरा पार्ट ऐसा है। बाबा भी ड्रामा पर रख देते हैं। *मनुष्य कहते हैं ईश्वर की भावी।* ईश्वर कहते हैं ड्रामा की भावी। ईश्वर ने बोला या इसने बोला, ड्रामा में था। कोई उल्टा काम हुआ ड्रामा में था, फिर सुल्टा हो जायेगा।

उत्तर 3. A- सुखधाम

बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे, ममत्व मिटता जायेगा। कोई का नाम-मात्र प्यार होता है। हमारा भी ऐसा है। अभी तो हम जाते हैं सुखधाम। यह तो जैसे सब मरे पड़े हैं, इनसे दिल क्या लगानी है। *शान्तिधाम में जाकर फिर

सुखधाम में आकर राज्य करेंगे।* इसको कहा जाता है पुरानी दुनिया से वैराग्य। बाप कहते हैं - इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सब खत्म हो जाने का है।

उत्तर 4. A- 9 लाख

सतयुगी श्रेष्ठाचारी दैवी राज्य में 9 लाख होंगे। कोई बोले इसका क्या प्रूफ है? कहो यह तो समझ की बात है ना। सतयुग में झाड़ होगा ही छोटा। धर्म भी एक है तो जरूर मनुष्य भी थोड़े होंगे।

उत्तर सं 5- B - *खुशी*

शिवबाबा के जो बनते हैं उन्हों को तो खुशी का पारा बड़ा जोर से चढ़ा रहना चाहिए। *जितना समय नजदीक आता है, उतनी खुशी होती है।* हमारे अब 84 जन्म पूरे हुए। अब यह अन्तिम जन्म है। हम जाते हैं अपने घर।

उत्तर सं 6- D - *B और C*

(B) ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइंट्स गुह्य होती जाती हैं। तो चित्रों में भी चेंज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेंज होती है। आगे यह थोड़े ही समझते थे कि *शिवबाबा बिन्दी है।* ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि पहले ऐसा क्यों नहीं बताया। बाप कहते हैं - सब बातें पहले ही थोड़े ही समझाई जाती हैं। *(C)* शिव को रूद्र भी कहते हैं। अब बाप पूछते हैं ज्ञान यज्ञ श्रीकृष्ण का है या शिव का है? *शिव को परमात्मा ही कहते हैं,*

उत्तर सं 7- C - *पार्वती*

यह तो बाप ही आकर पतितों को पावन बनाते हैं, अमरकथा सुनाते हैं। सो भी यहाँ ही सुनायेंगे ना। अमरनाथ पर तो नहीं सुनायेंगे ना। यह बातें तुम ही समझते हो। वो लोग कहाँ-कहाँ अमरनाथ पर जाकर धक्के खाते रहते हैं। यह नहीं समझते कि पार्वती को कथा किसने सुनाई? वहाँ तो शिव का चित्र दिखाते हैं। अच्छा शिव किसमें बैठा? शिव और शंकर दिखाते हैं। क्या शिव ने शंकर में बैठ कथा सुनाई? कुछ भी

समझते नहीं हैं, भक्ति मार्ग वाले अभी तक तीर्थ करने जाते रहते हैं। - *अर्थात शिव ने पार्वती को कथा सुनाई।*

उत्तर सं 8- A - *ब्रह्मा तन*

"निराकार परमात्मा का रिजर्व तन ब्रह्मा तन है"

यह तो अपने को पूरा निश्चय है कि परमात्मा अपने साकार ब्रह्मा तन द्वारा आकर पढ़ा रहे हैं.....अब इस पर समझाया जाता है परमात्मा की प्रवेशता होने समय ऐसे नहीं कि उस शरीर के कोई नयन, चयन बदली हो जाते हैं, नहीं। परन्तु हम जब ध्यान में जाते हैं तब नयन, चयन बदली हो जाता है परन्तु इस साकार ब्रह्मा का पार्ट ही गुप्त है। *जब परमात्मा इसके तन में आता है तो कोई को भी पता नहीं चलता, उसका यह तन रिजर्व किया हुआ है* इसलिए सेकेण्ड में आता है, सेकेण्ड में जाता है, अब इस राज़ को समझना। * (मम्मा की मुरली से)

उत्तर सं 9- B - *सुख और शांति*

अभी दु:ख बढ़ गया है। इस समय हमको सुख-शान्ति दोनों चाहिए। *भगवान से सब मांगते हैं - हे भगवान हमको सुख दो, शान्ति दो।* हर एक मनुष्य पुरुषार्थ करता ही है धन के लिए।

उत्तर सं 10- C - *वर्सा*

वास्तव में सिर्फ वह तुम्हारा बाप नहीं लेकिन सबका बाप है। यह भी समझने का है। जो भी सभी आत्मायें हैं उन सभी का बाप परमात्मा जरूर है। *बाबा-बाबा कहने से वर्सा जरूर याद आता है।* बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे।

उत्तर सं 11- A - *सौ*

21 जन्मों के लिए साहूकार बनना है तो *गरीब का एक पैसा भी साहूकार के 100 रूपये के बराबर है* इसलिए बाप जब डायरेक्ट आते हैं तो अपना सब कुछ सफल कर लो। जितना साहूकार का पद उतना गरीब का। दोनों का एक हो जाता है।

उत्तर सं 12- D - *चावल का*

बच्चे, शिवबाबा को तुम्हारा कुछ नहीं चाहिए। तुम भल खाओ, पियो, पढ़ो - रिफ्रेश होकर चले जाओ लेकिन *चावल मुट्ठी का भी गायन है।*..... बाप कहते हैं - कुछ भी पैसा न दो सिर्फ मुझे याद करो तो पाप नाश होंगे और मेरे पास आ जायेंगे। यह मकान आदि तुम बच्चों ने अपने लिए ही बनवाये हैं। *यहाँ चावल मुट्ठी का गायन है ना।*

उत्तर सं 13- C - *कशिश होगी*

बाप कहते हैं - इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सब खत्म हो जाने का है। विनाश के बाद स्वर्ग को देखेंगे। अब तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना चाहिए। *योग में रह कोई बात करेंगे तो उनको बड़ी कशिश होगी।* यह ज्ञान ऐसा है जो बाकी सब भूल जाता है।

उत्तर सं 14- B - *पार्टधारी*

मनुष्य आत्मा की कोई शक्ति नहीं चल सकती है। परमात्मा का ही सारा पार्ट चलता है, भल परमात्मा पार्ट में भी आता है, तो भी खुद न्यारा रहता है। लेकिन *आत्मा पार्ट में आते भी पार्टधारी के रूप में आ जाती है।* परमात्मा पार्ट में आते भी कर्मबन्धन से न्यारा है। आत्मा पार्ट में आते भी कर्मबन्धन के वश हो जाती है, यह है आत्मा और परमात्मा में अन्तर, भेद।

उत्तर सं 15- B - *गुणों का*

आत्मा और परमात्मा का रूप एक जैसा ज्योति रूप है। आत्मा और परमात्मा की आत्मा का साइज एक ही रीति में है, बाकी *आत्मा और परमात्मा में सिर्फ गुणों की ताकत का फर्क अवश्य है।* अब यह जो इतने गुण हैं वो सारी महिमा परमात्मा की है। परमात्मा दु:ख सुख से न्यारा है, सर्वशक्तिवान है, सर्वगुण सम्पन्न है, 16 कला सम्पूर्ण है, उनकी ही सारी शक्ति काम कर रही है। बाकी मनुष्य आत्मा की कोई शक्ति नहीं चल सकती है।

उत्तर सं 16- B - *गम्भीरता का*

इस ज्ञान में गम्भीरता का गुण धारण करना बहुत जरूरी है, कभी भी अपना अभिमान नहीं आना चाहिए। मैंने किया करावनहार करा रहा है मैं निमित्त हूं। ..... *हर सबजेक्ट में फुल मार्क्स जमा करनी है तो गम्भीरता का गुण धारण करो।*

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (14) खण्ड -{28}

प्रश्न 1- कुमारियां तो हैं ही किसकी ?

A- शिवबाबा की

B- बाप-दादा की

C- ब्रह्मा की

D- कन्हैया की

प्रश्न 2- बापदादा कौन सा सम्मेलन देखकर हर्षित हो रहे हैं ?

A- बाप बच्चों का

B- विचार समान मिलने का

C- स्नेह का

D- सफलता

प्रश्न 3- सुख किसमें है ?

A- शान्ति में

B- पवित्रता में

C- आनन्द में

D- पुरुषार्थ में

प्रश्न 4-सफलता का चुम्बक क्या है ?

A- मिलना और झुकना

B- झुकना और सहयोग देना

C- स्वीकार करना और समाना

D- मिलना और मोल्ड होना

प्रश्न 5- सबसे गरीब कौन है ?

A- मनुष्य

B- भारत

C- पतित

D अज्ञानी

प्रश्न 6 - खाओ, पियो, पढो और क्या करो ?

A- पवित्र बनो

B- बाप को याद करो

C- याद में मग्न हो जाओ

D- रिफ्रेश हो चले जाओ

प्रश्न 7- मरजीवा बनना आर्थात् ?

A- नया जन्म होना

B- पुरानी आयु पूरी होना

C- नॉलेज से परे

D- कर्मेन्द्रियजीत

प्रश्न 8- कर्मेनद्रियों के वश होना अर्थात् ?

A- शूद्रपन होना

B- संस्कार अटका हुआ न हो

C- परमात्म स्नेह नहीं

D- नॉलेज से परे

प्रश्न 9- बाबा किसलिए आया है ?

A- नर से नारायण बनाने

B- अमरपुरी का मालिक बनाने

C- नई दुनिया की स्थापना करने

D- रावण राज्य का खात्मा करने

प्रश्न 10- बाप तुमको क्या करने के लिए नहीं कहते ?

A- सिर झुकाने के लिए

B- माथा टेकने के लिए

C- हाथ जोडने के लिए

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 11- हर एक मनुष्य किसके लिए पुरुषार्थ करता है?

A- स्वर्गवासी बनने के लिए

B- सुख के लिए

C- शान्ति के लिए

D- पैसे के लिए

प्रश्न 12- कलियुग में क्या है ?

A- रावण राज्य

B- दुःख के बन्धन

C- आसुरी धर्म

D- विकारी मनुष्य

प्रश्न 13-पांडव, शक्तियों से एक्स्ट्रा मार्क्स कैसे ले सकते हैं ?

A- सेवा में ज्यादा हार्ड वर्क करने से

B- प्लैनिंग बुद्धि होने के कारण

C- विकारी वातावरण में रहते न्यारे प्यारे रहने से

D- अथक बन हर समय सेवा की स्टेज पर एवरेडी रहने से

प्रश्न 14- महापापी की लिस्ट में कौन आते हैं ? (जिनको ब्राह्मण जीवन का सबसे बड़े से बड़ा पाप व दाग लगता है)

A- जो बाबा का बनकर फारगति देते हैं।

B- जो प्रकृति के आकर्षण के वशीभूत हो जाते हैं।

C- जो संकल्प में विकारी दृष्टि और वृत्ति रखते हैं।

D- जो किसी व्यक्ति या वैभव के वशीभूत हो जाते हैं।

प्रश्न 15- विश्व परिवर्तक बनने के पहले कौनसी शक्ति चाहिए ?

A- दिव्य दृष्टि की शक्ति

B- स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति

C- सफलता की शक्ति

D- बाप की छत्रछाया

प्रश्न 16- किसी की विशेषता के कारण उससे विशेष स्नेह हो जाना यह क्या है ?

A- लगाव

B- मोह

C- आकर्षण

D- A और C

भाग (14) खण्ड {28} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 D - *कन्हैया की*

कुमारियाँ तो है ही कन्हैया की। बस एक शब्द याद रखना - सबमें एक, एकमत, एकरस, एक बाप। भारत के बच्चों को भी बापदादा दिल से मुबारक दे रहे हैं। जैसा लक्ष्य रखा वैसे लक्षण प्रैक्टिकल में लाया।

उत्तर सं 2 B - *विचार समान मिलने का*

सबका स्नेह, स्नेह के सागर में समा गया। ऐसे ही सदा स्नेह में समाये हुए औरों को भी स्नेह का अनुभव कराते चलो। *बापदादा सर्व बच्चों के विचार समान मिलने का सम्मेलन देख हर्षित हो रहे हैं।*

उत्तर सं 3 B - *पवित्रता में*

बाप कितना प्यार से बैठ समझाते हैं। बच्चे, यह एक जन्म अगर पावन बनेंगे तो 21 जन्म पावन दुनिया के मालिक बनेंगे। *पवित्रता में तो सुख है ना।* तुम पवित्र दैवी धर्म वाले थे। अब अपवित्र बन दु:ख में आये हो।

उत्तर सं 4 D - *मिलना और मोल्ड होना*

सर्व के सहयोग के कार्य के पहले सदा सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं का सहयोग विश्व को सहयोगी सहज और स्वत: बना ही लेता है इसलिए सफलता समीप आ रही है। *मिलना और मुड़ना अर्थात् मोल्ड होना - यही सफलता का

चुम्बक है।* बहुत सहज इस चुम्बक के आगे सर्व आत्मायें आकर्षित हो आई कि आई!

उत्तर 5. B- भारत

भारत का इतना बुरा हाल, कंगाल बिल्कुल, कौड़ी तुल्य! कहाँ वो राजे लोग जिनके सोने के महल। कहाँ ये गवर्मेन्ट जो सबसे कर्जा उठाती रहती है । इसको कहा जाता है बेगर गवर्मेन्ट। यह अपना चिह्न दिखलाते हैं काँटे का तख्त बनाय करके। *अभी तो भारत बेगर हुआ ना।* अभी बेगर हुआ भारत, जो प्रिन्स था, बिल्कुल ही मालामाल था । उनमें हीरे-जवाहरों के महल बनते थे। तो याद दिलाते हैं कि तुम बच्चे जब स्वर्ग में थे, ये सब भक्तिमार्ग शुरू हुआ, कैसे सोमनाथ के मंदिर बनाये, हीरे-जवाहरों के रत्न जड़ित, तुम्हारे सोने के और हीरे के कितने महल होंगे। तो अभी याद दिलाते हैं कि देखो, जानते हो कि बरोबर भारत ऐसा था।

उत्तर 6. D- रिफ्रेश हो चले जाओ

तुम स्वर्ग से उतरते-उतरते नर्क में आकर पड़े हो। अब तुमको फिर स्वर्ग में ले जाता हूँ। तुमको कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। सिर्फ मुझे याद करो और पवित्र बनो। भल एक पैसा भी न दो। *खाओ, पियो, पढ़ो, रिफ्रेश हो चले जाओ।* बाबा तो सिर्फ पढ़ाते हैं। पढ़ाई का पैसा कुछ नहीं लेते हैं। कहते हैं बाबा हम देंगे जरूर, नहीं तो वहाँ महल आदि कैसे मिलेंगे।

उत्तर 7 B- पुरानी आयु पूरी होना

जो बच्चे पूरा मरजीवा बन गये उन्हें कर्मेन्द्रियों की आकर्षण हो नहीं सकती। *मरजीवा बने अर्थात् सब तरफ से मर चुके, पुरानी आयु समाप्त हुई।* जब नया जन्म हुआ, तो नये जन्म, नई जीवन में कर्मेन्द्रियों के वश हो कैसे सकते।

उत्तर 8. D- नॉलेज से परे

ब्रह्माकुमार-कुमारी के नये जीवन में *कर्मेन्द्रियों के वश होना क्या चीज़ होती है - इस नॉलेज से भी परे।* मालिक बन, अथॉरिटी बन कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराये। आत्मा

मालिक को कर्म अपने अधीन न करे लेकिन अधिकारी बन कर्म कराता रहे। कर्मेन्द्रियाँ अपने आकर्षण में आकर्षित करती हैं अर्थात् कर्म के वशीभूत बनते हैं, अधीन होते हैं, बन्धन में बंधते हैं।

उत्तर 9. B- अमरपुरी का मालिक बनाने

अमरपुरी में जाने के लिए अमरनाथ बाबा से तुम अमरकथा सुनते हो। वहाँ तो कोई मरते नहीं। मुख से कभी ऐसे नहीं कहेंगे फलाना मर गया। आत्मा कहती है हम यह जड़जड़ीभूत शरीर छोड़कर नया लेता हूँ। वह तो अच्छा हुआ ना। वहाँ कोई बीमारी आदि होती नहीं। मृत्युलोक का नाम नहीं। *मैं आया हूँ तुमको अमरपुरी का मालिक बनाने।* वहाँ जब तुम राज्य करेंगे तो मृत्युलोक का कुछ भी याद नहीं पड़ेगा।

उत्तर 10. B- *माथा टेकने के लिए*

मोस्ट स्वीट बाबा को जितना याद करेंगे उतना वर्सा मिलेगा। तुम बहुत धनवान बनेंगे। *बाप तुमको ऐसा नहीं

कहते हैं कि माथा टेको।* मेले मलाखड़े में जाओ। नहीं। घर में बैठे बाप और वर्से को याद करो। बस।

माथा टेकने के लिए चाखड़ी रखते हैं, *मुझे तो पैर हैं नहीं जो तुमको माथा टेकना पड़े।*

भक्ति मार्ग में भी बहुत भटकते हैं, जिसको माथा टेकते उनको जानते नहीं। बाप आकर भटकने से छुड़ा देते हैं। समझाया जाता है।

उत्तर 11. D- पैसे के लिए

अविनाशी बाप अविनाशी पुरुषार्थ कराते हैं। यहाँ तो पैसे के लिए क्या नहीं करते हैं - बाप बच्चों को, बच्चे बाप को भी मार डालते हैं। पैसा इकट्ठा करने के लिए आजकल बड़े-बड़े जो भी ऑफिसर्स हैं, लाइसेन्स देते हैं, इतना रिश्वत खाते हैं, इतना पैसा लेते हैं, बात नहीं पूछो। 50-50 लाख का केस करते हैं रिश्वत खाने का। जो लोग अखबार पढ़ते हैं, जो पढ़े-लिखे हैं वो जानते हैं कि करोड़ों रुपया खा जाते हैं। फिर उनके ऊपर केस चलते हैं। *पैसे के लिए मनुष्य को कितना पाप करना पड़ता है।*

उत्तर 12. B- दुःख के बन्धन

अभी तुम जानते हो बेहद के बाप से हम स्वर्ग के घनेरे सुख पा रहे हैं। यह दुःख के सब बन्धन खलास हो जायेंगे। सतयुग में है सुख का सम्बन्ध। *कलियुग में है दुःख का बन्धन।* बाप सुख के सम्बन्ध में ले जाते हैं। उनको कहा ही जाता है - दुःख हर्ता सुख कर्ता।

उत्तर 13. C- विकारी वातावरण में रहते न्यारे प्यारे रहने से

पाण्डव वातावरण के विकारी वायब्रेशन के बीच ज्यादा रहते हैं, इसलिए ऐसे वातावरण में रहते हुए न्यारे और प्यारे रहते हैं तो उनको इस सफलता में शक्तियों से एक्स्ट्रा मार्क्स मिलती हैं। लेकिन इस लॉटरी को और ज्यादा कार्य में लाओ व ऐसा गोल्डन चान्स और ज्यादा लेना।

उत्तर 14. C- जो संकल्प में विकारी दृष्टि और वृत्ति रखते हैं।

वास्तव में ब्राह्मण आत्मा अगर *संकल्प में विकारी दृष्टि और वृत्ति रखती है अर्थात् इस चमड़ी को देखती है, चमड़ी अर्थात् जिस्म द्वारा विकारी भावना रखते हैं तो ऐसी भावना रखने वाले भी महापापी की लिस्ट में आ जाते हैं।* ब्राह्मण जीवन में बड़े से बड़ा पाप व दाग़ इस विकारी भावना का गिना जाता है।

उत्तर 15. B- स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति

जैसे बाप विश्व को परिवर्तन करने के लिए निमित्त हैं वैसे ही आप सब भी सदा अपने को इसी कार्य के निमित्त समझकर चलते हो?यह स्मृति कायम रहती है कि मुझे परिवर्तन करना है? *विश्व को परिवर्तन करने वाले पहले स्वयं को परिवर्तन करते हैं।* जो स्वयं का परिवर्तन किसी भी बात में नहीं कर पाते, वे विश्व के परिवर्तन का कार्य करने अर्थ निमित्त* कैसे बन सकते हैं? अभी-अभी बापदादा डायरेक्शन दें कि एक सेकेण्ड में अपनी स्मृति को परिवर्तन

कर लो अर्थात् स्वयं को देह नहीं आत्मा के स्वरूप में स्थित होकर देखो

उत्तर 16. D- A और C

किसी की विशेषता के कारण उससे विशेष स्नेह हो जाना - ये भी लगाव है। (10.10.21 का स्लोगन)

वर्तमान समय रूहानी दृष्टि और वृत्ति के अभ्यास की बहुत आवश्यकता है। 75 प्रतिशत इस रुहानियत के अभ्यास में कमज़ोर हैं। मैजॉरिटी *किसी-न-किसी प्रकार के प्रकृति के आकर्षण के वशीभूत हो ही जाते हैं।* व्यक्ति व वैभव कभी-न-कभी अपने वश कर लेता है। उसमें भी मन्सा संकल्प के चक्कर में खूब परेशान होने वाले हैं। इस परेशानी के कारण स्वयं से दिलशिकस्त भी हो जाते हैं।वास्तव में ब्राह्मण आत्मा अगर संकल्प में विकारी दृष्टि और वृत्ति रखती है अर्थात् इस चमड़ी को देखती है। शरीर के आकर्षण में आ जाते हैं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (15) खण्ड -{29}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1- सतयुग में ऊँच पद किस आधार पर मिलता है ?

A- सतोप्रधान बनने के आधार पर

B- बाप की याद में रहने के आधार पर

C- विकर्म विनाश होने के आधार पर

D- पवित्रता के आधार पर

प्रश्न 2- एक भी विकार होगा तो क्या होगा ?

A- सतयुग में नहीं जा सकेंगें

B- बाप से वर्सा नहीं मिलेगा

C- लक्ष्मी को वर नहीं सकते

D- निर्विकारी नहीं कहलाएंगे

प्रश्न 3- सुखधाम में किसका वर्सा है ?

A- राम का

B- निराकार का

C- बेहद के बाप का

D- लक्ष्मी-नारायण का

प्रश्न 4- इस पढ़ाई में नम्बरवन सब्जेक्ट कौनसी है ?

A- श्रीमत

B- पवित्रता

C- धारणा

D- योग

प्रश्न 5- हमें किस बात का पुरुषार्थ करना है?

A- बाप समान बनने का

B- सपूत बच्चा बनने का

C- माया को हराने का

D- बाप से पूरा वर्सा लेने का

प्रश्न 6- बाप डरने के लिए क्यों मना करते है?

A- क्योंकि हम भगवान के बच्चे है।

B- डरने से बाप का प्यार नहीं मिलेगा

C- डरने से ऊँच पद नहीं मिलेगा

D- स्वयं भगवान हमारा साथी है।

प्रश्न 7- सतयुग में कौन देर से आते है ?

A- त्रेता वाले

B- पवित्रता की कम धारणा वाले

C- 9 लाख के बाद वाली जनसंख्या

D- गृहस्थ वाले

प्रश्न 8- यहाँ का कौन सा कायदा है ?

A- पवित्र रहना

B- याद की यात्रा

C- दे दान तो छूटे ग्रहण

D- नर से नारायण बनना

प्रश्न 9- अत्याचार किस पर होते है ?

A- द्रोपदी पर

B- माताओं पर

C- सीता पर

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 10- यह विमान आदि कौन बना सकते है ?

A- भारतवासी

B- डबल विदेशी

C- अक्लमंद

D- साइंस वाले

प्रश्न 11- बाबा भी नया और क्या नया है ?

A- ज्ञान भी नया

B- भाग्य भी नया

C- बातें भी नई

D- वर्सा भी नया

प्रश्न 12- बाप पर निश्रय है तो क्या करना पड़े ?

A- देही- अभिमानी बने

B- महावीर बने

C- पवित्र बने

D- श्रीमत पर चले

प्रश्न 13- गृहस्थ व्यवहार में रहते मुझे याद करने से क्या होगा ?

A- पाप बढेंगे नहीं

B- पास्ट के विकर्म विनाश होंगें

C- नम्बरवन में आ जायेंगे

D- A और C

E- A और B

प्रश्न 14- वर्से का हक़दार कौन बनता है ?

A- अज्ञाकारी बच्चे

B- फरमानबरदार बच्चे

C- श्रीमत प्रमाण बच्चे

D- A और B

E- A,B और C

प्रश्न 15- दुनिया के लोग क्या नहीं जानते ?

A- कि भगवान आया हुआ है

B- हम 84 जन्म लेते है।

C- नई दुनिया की स्थापना हो रही है।

D- परमात्मा ज्योतिर्बिन्दू है।

प्रश्न 16- माया के तूफानों से लड़ने के बजाय क्या बनो ?

A- बाप समान

B- सर्वगुणसम्पन्न

C- अचल- अडोल

D- वारिस

भाग (15) खण्ड {29} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1. D- पवित्रता के आधार पर

*सतयुग में पवित्रता के आधार पर ऊंच पद मिलता है। * जो पवित्रता की कम धारणा करते हैं वह सतयुग में देरी से आते हैं और पद भी कम पाते हैं। यहाँ जब कोई आता है तो उन्हें कायदा सुनाओ - दे दान तो छूटे ग्रहण। 5 विकारों का दान दो तो तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे।

उत्तर 2. C- लक्ष्मी को वर नहीं सकते

5 विकारों का दान दो। अपनी दिल से पूछो हम सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी बने हैं? नारद का मिसाल है ना। *एक भी विकार होगा तो लक्ष्मी को वर कैसे सकेंगे।* कोशिश करते रहो, खाद को आग लगाते रहो। सोना जब

गलाते हैं, गलते-गलते यदि आग ठण्डी हो जाती है तो खाद निकलती नहीं है, इसलिए पूरी आग में गलाते हैं।

उत्तर 3. C- बेहद के बाप का

तुम पहले-पहले सतोप्रधान थे फिर सतो, रजो, तमो में आये। तमोप्रधान बने हो। इस समय 5 तत्व भी तमोप्रधान हैं इसलिए दु:ख देते हैं। हर चीज़ दु:ख देती है। यही तत्व जब सतोप्रधान होते हैं - तब सुख देते हैं। उसका नाम ही है - सुख-धाम। यह है दु:खधाम। *सुखधाम है बेहद के बाप का वर्सा।* दु:खधाम है रावण का वर्सा, अब जितना श्रीमत पर चलेंगे, उतना ऊंच बनेंगे।

उत्तर 4. B- पवित्रता

जहाँ तक मेरा पार्ट है, तुमको पढ़ाता रहूँगा। यह भी ड्रामा में नूँध है। जब कर्मातीत अवस्था को पायेंगे तब पढ़ाई पूरी होगी। बच्चे भी समझ जायेंगे। पिछाड़ी में इम्तहान की रिजल्ट मालूम होती है ना। *इस पढ़ाई में नम्बरवन सब्जेक्ट

है - पवित्रता की।* जब तक बाबा की याद नहीं रहती है, बाप की सर्विस नहीं करते हैं, तब तक आराम नहीं आना चाहिए।

उत्तर सं 5- D - *बाप से पूरा वर्सा लेने*

मौत सामने खड़ा है इसलिए अब याद की रफ्तार को बढ़ाना है। *सतयुगी दुनिया में ऊंच पद पाने का पूरा पुरुषार्थ करना है।*.....पुरुषार्थ पर मदार है ना। तुम भी पुरुषार्थ करेंगे तो ऊंच पद पायेंगे।.....बच्चे समझते हैं कल्प पहले भी बेहद के बाप से वर्सा लिया था अब फिर पढ़कर पा रहे हैं। समय बहुत थोड़ा है। यह तो विनाश हो जायेंगे इसलिए *बेहद के बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए।* वह बाप, टीचर, गुरू भी है।

उत्तर सं 6- C - *डरने से ऊँच पद नहीं मिलेगा*

बाप को ही सब कहते हैं हे पतित-पावन, लिबरेटर आओ। तो उनको ही तरस पड़ता है। रहमदिल है ना। तो बाप समझाते हैं कि बच्चे कोई भी बात में डरो मत। *डरने से इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।*

उत्तर सं 7- B - *पवित्रता की कम धारणा वाले*

सतयुग में पवित्रता के आधार पर ऊंच पद मिलता है। *जो पवित्रता की कम धारणा करते हैं वह सतयुग में देरी से आते हैं* और पद भी कम पाते हैं।

उत्तर सं 8- C - *दे दान तो छूटे ग्रहण*

यहाँ *जब कोई आता है तो उन्हें कायदा सुनाओ - दे दान तो छूटे ग्रहण।* 5 विकारों का दान दो तो तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे। तुम बच्चे भी अपनी दिल से पूछो कि हमारे में कोई विकार तो नहीं हैं?

उत्तर सं 9- B - *माताओं पर*

पवित्रता पर बड़ा हंगामा हुआ। भाई, काके, चाचे आदि कितने थे। इसमें बहादुरी चाहिए ना। तुम हो ही महावीर महावीरनी। सिवाए एक के और कोई की परवाह नहीं। ... *अत्याचार, माताओं पर ही होते हैं।*

उत्तर सं 10- A - *भारतवासी*

राम-राज्य सतयुग में होगा - वहाँ यह विमान आदि सब थे फिर यह सब गुम हो गये। फिर इस समय यह सब निकले हैं। अभी यह सब सीख रहे हैं। जो सीखने वाले हैं वह संस्कार ले जायेंगे। फिर आकर वहाँ विमान बनायेंगे। यह तुमको भविष्य में सुख देने वाले हैं। *यह विमान आदि भारतवासी भी बना सकते हैं।* कोई नई बात नहीं। अक्लमंद तो हैं ना।

उत्तर सं 11- C - *बातें भी नई*

तुम्हारी बुद्धि का ताला अब खुला है। अब यह है नई बात। *बाबा भी नया, बातें भी नई।* यह बातें किसकी समझ में जल्दी नहीं आयेंगी। जब तकदीर में हो तब कुछ समझें।

उत्तर सं 12- D - *श्रीमत पर चले*

यहाँ विकार बिगर जन्म हो न सके। मूत पलीती हैं ना। *अब बाप में निश्चय है तो श्रीमत पर पूरी रीति चलना पड़े ना।* हर एक की नब्ज भी देखी जाती है। उस अनुसार राय भी दी जाती है।

उत्तर सं 13- E - *A और B*

सभी को यही कहा कि *गृहस्थ व्यवहार में रहते मुझे याद करने से तुम्हारे पाप बढ़ेंगे नहीं और पास्ट के विकर्म विनाश होंगे।* अभी भी बाप समझाते हैं, तुम ही भारतवासी सतयुग में जो सतोप्रधान थे, वह इस समय 84 जन्म लेते-लेते अब तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बन गई है।.....सतोप्रधान तब बनेंगे जब मुझ पतित-पावन बाप को याद करेंगे। इस योग अग्नि से ही पाप भस्म होंगे और आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी।

उत्तर सं 14- D - *A और B*

बाप कहते हैं तुम भी अपनी रचना को हाथ में रखो। अगर बच्चा तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता है तो बच्चा, बच्चा

नहीं। वह तो कपूत ठहरा। *आज्ञाकारी, फरमानबरदार बच्चा हो तो वर्से का हकदार बन सकता।*

उत्तर सं 15- A - *कि भगवान आया हुआ है।*

अब बाप आकर फिर से एक धर्म स्थापन कर रहे हैं। तुम बच्चे राजयोग सीख रहे हो। जरूर भगवान ही राजयोग सिखायेंगे। यह किसको पता नहीं है। .....बाप ही नई दुनिया की राजधानी स्थापन कर रहे हैं। तो बच्चों को महावीर बनना है। *दुनिया में यह कोई थोड़े ही जानते कि भगवान आया हुआ है।*

उत्तर सं 16- C - *अचल-अडोल*

रावण के राज्य में रहते हुए हम राम के बने है तो माया महावीरो से महावीर बनकर लड़ेगी। विजयी बनने के लिए सर्व शक्ति

मान का साथ और हाथ बहुत जरुरी है। बालक सो मालिक की स्मृति से बाप को आगे करदो और आप रूहानी मोजो में

रहो।.... *महावीर बनो, माया के तूफानों से लड़ने के बजाए अचल-अडोल बनो'*

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (15) खण्ड -{30}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1- पूरी- पूरी हिम्मत किसमें करनी है?

A- श्रीमत पर चलने में

B- पवित्र बनने में

C- फोलो फादर करने में

D- रचना को हाथ मे रखने में

प्रश्न 2- बाप का वर्सा किस आधार पर है ?

A- ज्ञान

B- योग

C- धारणा

D- सेवा

प्रश्न 3- सुख और आनन्द का आधार क्या है ?

A- परमात्म प्यार

B- आत्मिक लव

C- कर्मबन्धन का हिसाब

D- घर बैठे भी योग लगाना

प्रश्न 4- विकारों में जाने से क्या होता है ?

A- पवित्रता खत्म

B- बाप से सर्व सम्बन्ध समाप्त

C- विजयमाला में नहीं

D- पद भ्रष्ट

प्रश्न 5- निर्माण अवस्था किसे कहते है ?

A- शान्ति की अवस्था को

B- हैपीनेस को

C- रिटायर लाइफ

D- गोड़ली एजुकेशन को

प्रश्न 6- कर्मबन्धन का हिसाब होगा तो क्या होगा ?

A- बाप के पास नहीं आयेंगे

B- वारिस नहीं बनेंगें

C- वर्सा नहीं लेंगें

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 7- एजुकेशन को क्या कहा जाता है?

A- ब्लिस

B- पीस

C- हैप्पीनेस

D- प्यूरीफाय

प्रश्न 8- जो कर्मेन्द्रियजीत नहीं बनंगे वो कहाँ आयेंगे ?

A- सूर्यवंशी घराने के लास्ट में

B- चंद्रवंशी घराने में

C- 1 जन्म में

D- स्वर्ग के लास्ट में

प्रश्न 9- रामायण, महाभारत और किसका आपस में बहुत गहरा कनेक्शन है ?

A- शिवबाबा का

B- बापदादा का

C- कृष्ण का

D- गीता का

प्रश्न 10- महाभारत लड़ाई से क्या होगा ?

A- रावण खत्म

B- रावण राज्य खत्म

C- स्वर्ग की स्थापना

D- A और B

E- B और C

प्रश्न 11- पीस और हैप्पीनेस का गाडली अधिकार किससे लेना है ?

A- परमात्मा से

B- योग से

C- ब्लिस से

D- पढ़ाई से

प्रश्न 12- जो पढ़ेगा वह क्या बनेगा ?

A- नवाब

B- सर्वेन्ट

C- बिल्वड

D- वारिस

प्रश्न 13- अब बाबा गले मे कौन सा लॉकेट पहनाते हैं ?

A- गीता का

B- त्रिमूर्ति का

C- राजाई का

D- B और C

प्रश्न 14- देही अभिमानी बनने से क्या होगा ?

A- घड़ी घड़ी भूलेंगे नही

B- विघ्न नही आएंगे

C- मेहनत नहीं लगेगी

D- विकर्म नही होंगे

प्रश्न 15- गीता सुनकर तुम किस लायक बनते हो ?

A- कृष्ण

B- अर्जुन

C- विश्व के मालिक

D- भक्त

प्रश्न 16- गीता में कौनसे दो अक्षर आते हैं ?

A- अल्फ-बे

B- मनमनाभव-मामेकम

C- मनमनाभव-मध्याजीभव

D- मामेकम-मध्याजीभव

भाग (15) खण्ड {30} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 A - *श्रीमत पर चलने में*

तुम्हारी आत्मा ज्ञान का सागर बन रही है। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान तुमको है। *मीठे बच्चों को हिम्मत रखनी चाहिए। हमको बाबा की श्रीमत पर चलना चाहिए ना।*

उत्तर सं 2 A - *ज्ञान*

यह गाडली एज्युकेशन ब्लिस है ना, जिससे सुप्रीम पीस एण्ड हैपीनेस मिलती है। यह अटल अखण्ड सुख शान्तिमय स्वराज्य है गॉड की प्रापर्टी, जो बच्चों को मिलती

है। फिर *जितना-जितना जो ज्ञान उठायेंगे, उतना बाप का वर्सा मिल जायेगा।*

उत्तर सं 3 B - *आत्मिक लव*

ब्लड कनेक्शन में ही दु:ख है, तुम्हें उसका त्याग कर *आपस में आत्मिक लव रखना है, यही सुख और आनंद का आधार है।* ...यहाँ हम सबका आत्मिक लव है, जो परमात्मा सिखलाते हैं।

उत्तर सं 4 D - *पद भ्रष्ट*

जैसे तीर्थ पर जाते हैं तो काम क्रोध सब बन्द कर देते हैं। रास्ते में काम चेष्ठा थोड़ेही करेंगे। वह तो सारा रास्ता अमरनाथ की जय, जय करते जाते लेकिन लौट आते तो फिर वही विकारों में गोता खाते रहते, तुमको तो लौटना नहीं है। काम, क्रोध में आना नहीं है। *विकारों में जायेंगे तो पद भ्रष्ट हो जायेंगे।*

उत्तर 5. C- रिटायर लाइफ

परमात्मा आकर जो अपनी राजधानी स्थापन करते हैं, उसमें सुख और आनंद है। बाकी इनकारपोरियल दुनिया में तो सुख आनंद की बात ही नहीं, प्रेम की बात ही नहीं है। वह तो है इनकारपोरियल आत्माओं का निवास स्थान। *वह है सबकी रिटायर लाइफ अथवा निर्वाण अवस्था।* जहाँ दु:ख सुख की कोई फीलिंग नहीं रहती।

उत्तर 6. B- वारिस नहीं बनेंगें

विजय माला में आना है तो विशेष होली (पवित्र) बनने का पुरुषार्थ करो। जब पक्के संन्यासी अर्थात् निर्विकारी बनेंगे तब विजय माला का दाना बनेंगे। *कोई भी कर्मबन्धन का हिसाब-किताब है, तो वारिस नहीं बन सकते, प्रजा में चले जायेंगे।*

उत्तर 7. A- ब्लिस

बच्चे और प्रजा में रात दिन का फ़र्क रहता है। वह वारिस बन वर्सा लेते हैं। जैसे तुमने उनसे बल्ड कनेक्शन तोड़ इस निराकार वा साकार की गोद ली है तो वारिस बन गये हो। इसमें भी फिर जितना ज्ञान लेंगे वह है ब्लिस। *एज्यूकेशन को ब्लिस कहा जाता है।* तो जितना वह उठायेंगे, उतना उस राजधानी में प्रजा में सुख लेंगे। यह गाडली एज्युकेशन ब्लिस है ना, जिससे सुप्रीम पीस एण्ड हैपीनेस मिलती है। यह अटल अखण्ड सुख शान्तिमय स्वराज्य है गॉड की प्रापर्टी, जो बच्चों को मिलती है।

उत्तर 8. B- चंद्रवंशी घराने में

यह ज्ञान तो सिर्फ अब संगम पर मिलता है जब दैवी धर्म की स्थापना हो रही है। *तो सुनाया जो पूरा कर्मेन्द्रियों को नहीं जीतेंगे वह चन्द्रवंशी घराने की माला में चले जायेंगे।* जो जीतेंगे वह सूर्यवंशी घराने में आयेंगे।

उत्तर 9. D- गीता का

दशहरा होना माना रावण खत्म होना और सीताओं को छुटकारा मिलना। लेकिन दशहरा मनाने से तो रावण से छुटकारा मिलता नहीं। जब महाभारत होता है तब सब सीताओं को छुटकारा मिल जाता है। महाभारत लड़ाई से रावणराज्य खत्म होता है तो *रामायण, महाभारत और गीता का आपस में बहुत गहरा कनेक्शन है।*

उत्तर 10. B- रावण राज्य खत्म

जब महाभारत होता है तब सब सीताओं को छुटकारा मिल जाता है। *महाभारत लड़ाई से रावण राज्य खत्म होता है* तो रामायण, महाभारत और गीता का आपस में बहुत गहरा कनेक्शन है।

उत्तर 11. D- पढ़ाई से

पीस और ब्लिस का वरदान लेने के लिए शमा पर पूरा फिदा होना है। *पढ़ाई से सुप्रीम पीस और हैपीनेस का गॉडली अधिकार लेना है।*

उत्तर 12. A- नवाब

गाड हिमसेल्फ, जिनके तुम बीलव्ड बच्चे बने हो। प्रजा भी बन रही है लेकिन बच्चे, बच्चे हैं, प्रजा प्रजा है। जो संन्यास करते वह वारिस बन जाते। उनको रॉयल घराने में अवश्य ले जाना है। लेकिन अगर ज्ञान इतना नहीं उठाया है तो पद नहीं पायेंगे। *जो पढ़ेगा वह नवाब बनेगा।* जो आते जाते हैं वह फिर प्रजा में आयेंगे। फिर जितना होली बनेंगे उतना सुख मिलेगा। बीलव्ड तो वह भी बनते लेकिन फुल बिलवेड तब बनते हैं जब बच्चा बनते हैं। समझा।

उत्तर 13. D- B और C

यह ज्ञान है कण्ठ करने का। तुमको मालूम है गीता का लॉकेट बनाते हैं। उसमें छोटे अक्षर होते हैं। *अब बाबा भी तुम्हारे गले में लॉकेट पहनाते हैं - त्रिमूर्ति और राजाई का।* बाबा कहते हैं गीता है दो अक्षर - अल्फ और बे। यह है गुप्त मन्त्र का लॉकेट मनमनाभव।

उत्तर 14. B- विघ्न नही आएंगे

वह याद से ही उतरना है, इसमें मेहनत लगती है। घड़ी-घड़ी तुम भूल जाते हो। तुम बाबा को याद करते रहो तो कभी विघ्न नहीं पड़ेंगे। *देह-अभिमानी बनने से विघ्न पड़ते हैं।* देही-अभिमानी बनते हो अन्त में। फिर आधाकल्प कुछ विघ्न नहीं पड़ता। यह कितनी गुह्य बातें हैं समझने की।

उत्तर 15. C- विश्व के मालिक

फिर महाभारत आयेगा तो रावण राज्य खत्म हो रामराज्य शुरू हो जायेगा। रामायण और महाभारत में क्या फ़र्क है? रामराज्य की स्थापना और रावणराज्य का विनाश होने का है। *गीता सुनकर तुम विश्व का मालिक बनने लायक बनते हो।* गीता और महाभारत भी है अभी के लिए।

उत्तर 16. C- मनमनाभव-मध्याजीभव

लड़ाई है 5 विकारों पर जीत पाने की। *तुमको बाप गीता के दो अक्षर सुनाते हैं मनमनाभव-मध्याजी भव।* गीता के शुरू में और अन्त में यह दो अक्षर आते हैं। बच्चे समझते हैं - बरोबर गीता का एपीसोड चल रहा है।

(मनमनाभव – एक पर एकाग्र मन) + (मध्याजीभव – स्वर्ग के सम्पूर्ण रूप का स्वरूप) + (मनसा सेवा – मन से सेवा) = सर्मपण

अभ्यास

मनमनाभव: जैसे ड्रामा हर सेकंड चल रहा है, मेरा मन भी प्रगति कर रहा है। यह कहीं अटकता नहीं है। मेरे मन में मैं बापदादा के गुणों, कर्तव्यों और सम्बन्धों के बारे में सोचता हूँ।

मध्याजीभव: मैं कमल, गदा, शंख और चक्र को धारण कर मध्याजीभव के मंत्र में स्थित हो जाता हूँ।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (16) खण्ड -{31}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1- वह जिस्मानी नॉलेज जैसे .....है, यह है सच्चा..... ?

A- वॉल्यूम, गीता ज्ञान

B- घी, घासलेट

C- घासलेट, घी

D- महाभारत, गीता ज्ञान

प्रश्न 2- जो हड़डी सर्विस करेंगे वह क्या बनेंगे ?

A- महाराजा

B- राजकुमार

C- महाराजकुमार

D- विश्व महाराजन

प्रश्न 3- कर्म करते स्वयं को....समझ एक मुझ.....को याद करो ?

A आत्मा, परमात्मा

B- आशिक, माशूक़

C- बिंदु, बिंदु

D- परवाना, शमा

प्रश्न 4- जन्म जन्मांतर के जो पाप हैं जिसके कारण कट चढ़ी हुई है,वह सब कैसे निकलेगी ?

A- दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाने से

B- ज्ञान का मंथन करने से

C- पुण्य का खाता बढ़ाने से

D- बाप की याद में रहने से

प्रश्न 5- तुम चिट्ठी कैसे लिखते हो ?

A- टू शिव बाबा

B- टू ब्रह्मा बाबा

C- टू शिव बाबा केयर ऑफ ब्रह्मा

D- टूब्रह्मा बाबा केयर ऑफ शिव बाबा

प्रश्न 6- शिव बाबा ने हमको गोद मे लेकर कौनसा बच्चा बनाया है ?

A- मीठा बच्चा

B- सिकीलधा बच्चा

C- धर्म का बच्चा

D- प्यारा बच्चा

प्रश्न 7- बाप किसलिए आया है ?

A- मिलन मनाने

B- साथ ले जाने

C- देही- अभिमानी बनाने

D- स्वयं का परिचय देने

प्रश्न 8- मौत के पहले कौन सा पुरुषार्थ करना है ?

A- पूरी पढ़ाई पढ़ने का

B- याद में रहने का

C- अपना सब कुछ सफल करने का

D- तन मन धन से सेवा करने का

प्रश्न 9- बाबा ने किसके मुआफ़िक मुट्ठी बन्द मत करने को कहा ?

A- चींटी

B- बन्दर

C- बादशाह

D- बच्चे

प्रश्न 10- पुरूषार्थ में आगे नम्बर कौनसे बच्चे लेते हैं ?

A- जो निश्चय बुद्धि होते हैं।

B- जो पूरा पूरा बलि चढ़ते हैं।

C- जो न्यारा प्यारा रहते हैं।

D- जो याद और सेवा का बैलेंस रखते हैं

प्रश्न 11- बाप को याद करने से क्या बन जायेंगे ?

A- नर से नारायण

B- तमोप्रधान से सतोप्रधान

C- पतित से पावन

D- देही- अभिमानी

प्रश्न 12- निराकार टीचर बन किसको पढ़ाता है?

A- बच्चों को

B- टीचर को

C- आत्माओं को

D- सालिग्रामों को

प्रश्न 13- महारथी को भी कौन मूर्छित कर देती है ?

A- माया

B- असंतुष्टता

C- छोटी चींटी

D- मुश्किल बनाने की आदत

प्रश्न 14- कई बच्चों की जन्मपत्री में क्या होता है ?

A- रहम- ही -रहम

B- लापरवाही- डोंटकेयर

C- सरकमस्टॉश प्रमाण

D- सहज पालना की श्रेष्ठ स्थिति

प्रश्न 15- सर्वश्रेष्ठ पोजीशन कौन सी है ?

A- हमें भगवान स्वयं पढ़ाता है।

B- हम ऑलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं।

C- हम आत्माओं का कल्याण करने वाली अथॉरिटी स्वरूप है।

D- हम शान्ति के सागर के बच्चे हैं।

प्रश्न 16- किसका स्नेह एक- दो से ज्यादा है?

A- ब्रह्मा माँ- बच्चों का

B- बाप- बच्चों का

C- भाई- भाई का

D- ब्राह्मण परिवार का

भाग (16) खण्ड {31} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1. C- घासलेट, घी

वह जिस्मानी नॉलेज जैसे घासलेट है, यह है सच्चा घी। तो रात-दिन का फर्क है ना। रावण राज्य में तुमको घासलेट खाना पड़ता है। आगे इतना सस्ता सच्चा घी मिलता था, फिर महंगा हो गया तो घासलेट (तेल) खाना पड़ा।

उत्तर 2. C- महाराजकुमार

जब कहते हैं हम बाबा से वर्सा लेने आये हैं तो वह नशा क्यों नहीं चढ़ता! स्वीट होम, स्वीट राजधानी भूल जाती है। बाबा जानते हैं *जो हड्डी सर्विस करते हैं वही महाराजकुमार बनेंगे।* तुमको यह नशा क्यों नहीं रहता है? क्योंकि याद में

नहीं रहते हैं। सर्विस में पूरा तत्पर नहीं रहते हैं। कभी तो सर्विस में उछल पड़ते, कभी ठण्डे हो जाते। यह हर एक अपने से पूछो - ऐसा होता है ना।

उत्तर 3. B- आशिक, माशूक़

कर्म करते स्वयं को आशिक समझ एक मुझ माशूक को याद करो, याद से ही तुम पावन बन पावन दुनिया में जायेंगे।

उत्तर 4. D- बाप की याद में रहने से

यह पारलौकिक बाप ही कहते हैं - हे बच्चों। सब बच्चे सुन रहे हैं। न सिर्फ तुम बच्चे परन्तु सभी को कहते हैं। *बच्चे बाप की याद में रहो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप हैं, जिसके कारण कट चढ़ी हुई है, वह सब निकल जायेगी* और तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी।

उत्तर 5. C- टू शिव बाबा केयर ऑफ ब्रह्मा

बाप खुद कहते हैं मैं इस पुराने तन में प्रवेश करता हूँ। यह भी पतित से पावन बन रहे हैं। यह किसने कहा? शिवबाबा ने। यह भी पावन बन रहे हैं। इनका भी मेरे साथ हिसाब-किताब है। इनके साथ कोई का हिसाब-किताब नहीं। *तुम चिट्ठी लिखते हो - शिवबाबा केअर आफ ब्रह्मा।* परन्तु माया ऐसी है जो निरन्तर याद करने नहीं देती है। बुद्धियोग घड़ी-घड़ी तोड़ देती है।

उत्तर 6. C- धर्म का बच्चा

तुमको सम्मुख बैठ बाप समझाते हैं। फिर भी नशा नहीं चढ़ता है। *ओहो! शिवबाबा ने हमको गोद में लिया है। धर्म का बच्चा बनाया है।* परन्तु सबको तो यहाँ पर नहीं रखेंगे ना। हजारों बच्चे हैं। सबको यहाँ कैसे रखेंगे, इतनी जगह कहाँ है! बाप कहते हैं - तुमको रहना अपने घर में ही है। बाप को याद करना है। सबसे मीठा जो बेहद का बाप है, उनके तुम बच्चे बने हो।

उत्तर 7. B- साथ ले जाने

बाबा आकर इस ब्रह्मा तन द्वारा पढ़ाते हैं। तो बच्चे भल कहाँ भी हों, किसी भी सेन्टर पर हों, जानते हो ज्ञान सागर पारलौकिक परमपिता परमात्मा से हमको जीवनमुक्ति का अथवा राजाई का वर्सा पाना है। अगर हम पढ़ाई छोड़ देंगे तो वर्सा पा नहीं सकेंगे। *बाप तो आये हैं साथ ले जाने।* नई दुनिया स्थापन हो जायेगी फिर सबको खिवैया ले जायेंगे।

उत्तर 8. B- याद में रहने का

मौत के पहले जितना हो सके याद में रहने का पुरुषार्थ कर लो, इससे ही तुम्हारी कमाई है। मेरा बच्चा बनकर कभी भूल से भी कोई पाप कर्म नहीं करना। भल माया के कितने भी तूफान आयें लेकिन पतित तो कभी नहीं बनना।

उत्तर 9. B- बन्दर

बाबा बोले, बेगर बन जाओ तो फिर ऐसा प्रिन्स बनाऊंगा, साक्षात्कार करा दिया। ख्याल आया - अब यह क्या करेंगे। विनाश होना ही है। *बाबा ने कहा बन्दर मुआफिक मुट्ठी बन्द नहीं करो, खोल दो।* झट खोल दी। नहीं

तो इतने बच्चों का खर्चा कैसे चलता। बच्चू बादशाह, पीरू वजीर यह हो गया। एक को ही पैसे के लिए पकड़ लिया।

उत्तर 10. B- जो पूरा पूरा बलि चढ़ते हैं।

जो बाप पर पूरा-पूरा बलि चढ़ते हैं अर्थात् कुर्बान जाते हैं, सबसे आगे वही जाते। बाप पर बच्चे कुर्बान जाते और बच्चों पर बाप कुर्बान जाते। तुम अपना कखपन, पुराना तन-मन-धन बाप को देते और बाप तुम्हें विश्व की बादशाही देता इसलिए उसे गरीब निवाज़ कहा जाता है। गरीब भारत को ही दान देने बाप आये हैं।

उत्तर 11. B- तमोप्रधान से सतोप्रधान

बाप समझाते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। याद तो तुम बाप को भी करते हो, पति को भी करते हो। अब मैं तुम्हारा पतियों का पति, बापों का बाप हूँ, टीचर भी हूँ। मैं तुम्हारा सब कुछ हूँ।

उत्तर 12. D- सालिग्रामों को

तुम्हारी बुद्धि जानती है - *बाबा है निराकार, वह टीचर बनकर हम सालिग्रामों को पढ़ाते हैं।* कहते हैं बच्चों, हम फिर से तुमको विश्व का मालिक बनाने आया हूँ। 5 हजार वर्ष पहले भी तुम स्वर्ग के मालिक थे, याद है ना। संगम पर ही तुमको बनाया था।

उत्तर 13. C- छोटी चींटी

इन सब बातों का सहयोग ही सहजयोगी बना देता है। नहीं तो कभी छोटा सा सरकमस्टांश, साधन, समय, साथी आदि भले होते चींटी समान हैं लेकिन *छोटी चींटी महारथी को भी मूर्च्छित कर देती है।* मूर्च्छित अर्थात् वरदानों की सहज पालना की श्रेष्ठ स्थिति से नीचे गिरा देती है।

उत्तर 14. A- रहम- ही -रहम

अपने परिवार की कमी अपनी कमी होती है, इसलिए बाप को घृणा नहीं लेकिन रहम आता है। बापदादा कभी-

कभी बच्चों की आदि से अब तक की जन्मपत्री देखते हैं। *कई बच्चों की जन्मपत्री में रहम-ही-रहम होता है* और कई बच्चों की जन्मपत्री राहत देने वाली होती है। अपनी आदि से अब तक की जन्मपत्री चेक करो।

उत्तर 15. B- हम ऑलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं।

ऑलमाइटी अथारिटी के बच्चे हैं, यह भूल जाते हो। आजकल छोटी-मोटी अथॉर्टी रखने वाले कितनी खुमारी में रहते हैं। तो ऑलमाइटी अथारिटी वाले कितनी खुमारी में रहने चाहिए? शास्त्रवादी जो अपने को शास्त्रों की अथारिटी मानते हैं वह भी कितनी खुमारी में, कितना उल्टी नालेज के निश्चय में रहते हैं। किसने सुनाया, किसने देखा, कुछ भी पता नहीं। फिर भी शास्त्रों की अथॉरिटी मानने के कारण अपनी हार कभी नहीं मानेंगे। तो आप लोगों की सर्व से श्रेष्ठ अथॉरिटी है। ऐसे अथॉरिटी से किसके भी सामने जाओ तो सभी सिर झुकायेंगे।

उत्तर 16. B- बाप- बच्चों का

बाप का स्नेह और बच्चों का स्नेह दोनों एक-दो से ज्यादा ही है। स्नेह मन को और तन को अलौकिक पंख लगाए समीप ले आता है। स्नेह ऐसा रूहानी आकर्षण है जो बच्चों को बाप की तरफ आकर्षित कर मिलन मनाने के निमित्त बन जाता है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (16) खण्ड -{32}

प्रश्न 1- अभी तुम बच्चे जान गए हो कि हमको यहाँ ..... समझकर बैठना है ?

A- स्टूडेंट

B- आत्मा

C- बच्चा

D- भाई बहन

प्रश्न 2- आत्मा क्या है यह नही जानते तो फिर ..... को कैसे जानेंगे ?

A- सृष्टि चक्र

B- झाड़

C- ड्रामा

D- परमात्मा

प्रश्न 3- अपनी बुद्धि को किसमे बिजी रखने से सब फिकरातों से फारिग हो जाएंगे ?

A- पुरुषार्थ में

B- सेवा में

C- ज्ञान मंथन में

D- एक बाप की याद में

प्रश्न 4- जो अपने को शिव बाबा के यज्ञ का सर्वेंट समझते हैं उनकी निशानी क्या होगी?

A- देही अभिमानी होंगे

B- फरमानबरदार होंगे

C- वरफादार होंगे

D- जो बोलेंगे वो फौरन मान लेंगे

प्रश्न 5- कौन सी स्मृति से सहजयोग का अनुभव होगा ?

A- स्वमान

B- ईश्वरीय प्राप्ति

C- करनकरावनहार

D- मनमनाभाव

प्रश्न 6- इच्छाएं ..... के समान हैं आप पीठ कर दो तो पीछे पीछे आएंगी ?

A- परछाई

B- विष

C- माया

D- दुःख

प्रश्न 7- चलन खराब होगी तो ?

A- धारणा नही होगी

B- योग नहीं लगेगा

C- सौगुना दंड पड़ जायेगा

D- त्रेता में आ जाएंगे

प्रश्न 8- देहधारियों को याद करने से..... ?

A- दुःख मिलेगा

B- विकर्म बनेंगे

C- वर्सा नही मिलेगा

D- खुशी नही रहेगी

प्रश्न 9- दुनिया में किसी को क्या पता नहीं है ?

A- हमको कौन पढ़ाता है

B- हम शिवबाबा की सन्तान हैं

C- हम आत्मा है

D- भगवान निराकार हैं

प्रश्न 10- लक्ष्मी- नारायण तो क्या होकर गये ?

A- सबसे बड़े किंग- क्वीन

B- महाराजा- महारानी

C- फर्स्ट नम्बर प्रिन्स- प्रिन्सेज

D- राजा- रानी

प्रश्न 11- इस ज्ञान के सिवाय बाकी सब क्या है ?

A- व्यर्थ बातें

B- कलियुगी बातें

C- सत्यानाश करने वाली बातें

D- देह-दुनिया की बातें

प्रश्न 12- शरीर निर्वाह अर्थ तुमको धंधा आदि भी करना है और साथ साथ..... भी ?

A- बाबा को याद

B- ज्ञान का चिन्तन

C- रूहानी सर्विस

D- धारणा

प्रश्न 13- यहाँ किसकी मत पर चलना है ?

A- बाप की मत पर

B- टीचर की मत पर

C- गुरु की मत पर

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 14- इनमें से कौन नही बोलते ?

A- शिव बाबा

B- ब्रह्मा

C- विष्णु

D- शंकर

प्रश्न 15- रावण का श्राप मिलने से उतरते हैं। उतरने में टाइम तो लगता है। कितनी सीढ़ी उतरनी पड़ती है ?

A- 62

B- 63

C- 21

D- 84

प्रश्न 16- इन लक्ष्मी नारायण को भी कहेंगे..... क्योंकि सारे

विश्व के मालिक हैं ?

A- भगवान

B- पवित्र

C- सर्वशक्तिमान

D- महाराजा महारानी

भाग (16) खण्ड {32} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1 - *आत्मा*

रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझा रहे हैं। *अभी तुम बच्चे जान गये हो कि हमको यहाँ आत्मा समझकर बैठना है।* सारी दुनिया में एक भी ऐसा मनुष्य नहीं होगा जो अपने को आत्मा समझते हो।

उत्तर 2 - D - *परमात्मा*

आत्मा क्या है, यही नहीं जानते तो परमात्मा को फिर कैसे जानेंगे। बाप द्वारा ही तुमको आत्मा की समझानी मिलती है कि मूल क्या चीज़ है।

उत्तर 3- C - *ज्ञान मंथन में*

अभी तुम मूलवतन, सूक्ष्मवतन और सतयुग से लेकर कलियुग तक सब राज़ों को जान गये हो। फिर भी बुद्धि में यह क्यों नहीं रहता! तुम भूल क्यों जाते हो? सदैव बुद्धि में यह टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे। .... *अपनी बुद्धि को ज्ञान मंथन में बिजी रखो तो सब फिकरातों से फारिग हो जायेंगे,* सदा खुशी बनी रहेगी"

उत्तर 4- D - *जो बोलेंगे वो फौरन मान लेंगे*

शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से जो कुछ बोलेंगे, उसे वह फौरन मान लेंगे। जो कहे - उसे मानना, इसको ही श्रीमत

कहा जाता है। श्री-श्री शिवबाबा की मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बनते हो। श्रेष्ठ बनना माना विजय माला में आना।

उत्तर 5- C - *करनकरावनहार*

करन-करावनहार की स्मृति द्वारा सहजयोग का अनुभव करने वाले सफलतामूर्त भव

कोई भी कार्य करते यही स्मृति रहे कि इस कार्य के निमित्त बनाने वाला बैकबोन कौन है। बिना बैकबोन के कोई भी कर्म में सफलता नहीं मिल सकती, इसलिए *कोई भी कार्य करते सिर्फ यह सोचो मैं निमित्त हूँ, कराने वाला स्वयं सर्व समर्थ बाप है। यह स्मृति में रख कर्म करो तो सहज योग की अनुभूति होती रहेगी।* फिर यह सहजयोग वहाँ सहज राज्य करायेगा। यहाँ के संस्कार वहाँ ले जायेंगे।

उत्तर 6- A - *परछाई*

सदा अपने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते रहो - वाह मेरा श्रेष्ठ ईश्वरीय भाग्य! धन-दौलत का भाग्य नही,

ईश्वरीय भाग्य। इस भाग्य के आगे धन तो कुछ नहीं है, वह तो पीछे-पीछे आयेगा। जैसे परछाई होती है वह आपेही पीछे-पीछे आती है या आप कहते हो पिछे आओ । तो यह सब परछाई हैं लेकिन भाग्य है - 'ईश्वरीय भाग्य' । सदा इसी नशे में रहो - अगर पाना है तो सदा का पाना है। .....*इच्छायें परछाई के समान हैं आप पीठ कर दो तो पीछे-पीछे आयेंगी। *

उत्तर 7- A - *धारणा नही होगी*

चलन खराब होगी तो फिर धारणा नहीं होगी। किसको समझा नहीं सकेंगे। कदम आगे बढ़ाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। पीछे नहीं आना चाहिए।सतयुग में खराब कुछ होता नहीं। बाप जब आकर ज्ञान देते हैं

उत्तर 8- B - *विकर्म बनेंगे*

प्रदर्शनी में सर्विस करने से बहुत खुशी होगी। सिर्फ बताना है कि बाप कहते हैं मुझे याद करो। *देहधारियों को याद करने से विकर्म बनेंगे।* वर्सा देने वाला मैं हूँ। मैं सबका

बाप हूँ।कर्म का हिसाब-किताब तो बच्चों को भोगना ही है । बाप कहते हैं इनसे मेरा कोई ताल्लुक नहीं है । ये तो तुम्हारे पाप किए हुए हैं या इस समय में भी कोई ऐसे पाप करते हो, इसलिए तुमको दु:ख भोगना पड़ता है ।

उत्तर 9- B - *हम शिवबाबा की सन्तान हैं*

बड़े आदमी का बच्चा होगा तो जरूर बड़ा इम्तिहान पास करने का ख्याल होगा। तुम जानते हो हम बहुत बड़े बाप के बच्चे हैं। *दुनिया में किसको पता नहीं है - हम शिवबाबा की सन्तान हैं।* तुम बहुत बड़े ऊंच ते ऊंच बाप के बच्चे हो।

उत्तर 10 - A - *सबसे बड़े किंग- क्वीन*

बाबा आ करके हमको यह सारी नॉलेज सुनाते हैं, समझ भी चाहिए ना। किसको भी यही बात सुनाओ। यह चित्र है एम आब्जेक्ट। यह *लक्ष्मी-नारायण तो सबसे बड़े किंग क्वीन हो गये हैं।* भारत स्वर्ग था ना। कल की बात है। फिर इन्होंने यह राजगद्दी कैसे गँवाई।

उत्तर 11- C - *सत्यानाश करने वाली बातें*

बाबा परमधाम से आते हैं, हमको पढ़ाते हैं। सारा दिन आपस में यही रूह-रिहान होनी चाहिए। *सिवाए इस ज्ञान के बाकी सब हैं सत्यानाश करने वाली बातें।* .....बाप समझाते हैं - ईविल बात तो कभी भी सुननी नहीं चाहिए। कल्याण की बातें ही सुनो। नहीं तो मुफ्त अपनी सत्यानाश कर देंगे। बाप तो आकर तुम्हें ज्ञान ही सुनाते हैं।

उत्तर 12- C - *रूहानी सर्विस*

शरीर निर्वाह अर्थ तुमको धन्धा आदि भी करना है और साथ-साथ यह रूहानी सर्विस भी। .....दुनिया की बात अलग है, तुम्हारा तो एक-एक सेकेण्ड का टाइम बहुत वैल्युबुल है। तुम कभी भी ऐसी बातें नहीं सुनो, नहीं करो। इससे तो तुम बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारी बहुत कमाई है। जहाँ तहाँ बाप का परिचय जाकर दो। यही रूहानी सर्विस करते रहो।

उत्तर सं 13- D - *उपरोक्त सभी*

हम बहुत बड़े ते बड़े बाप के बच्चे हैं। बहुत बड़े सतगुरू की मत पर हम चलते हैं। टीचर की, गुरू की मत पर चलना होता है ना। उनको फालोअर कह देते हैं। *यहाँ बाप की मत पर भी चलना है, टीचर की मत पर भी चलना है, तो गुरू की मत पर भी चलना है।* तुम जानते हो वह हमारा बाप, टीचर, सतगुरू है। उनकी मत पर जरूर चलना है। यह तो एक ही है - ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा, वह बोलते हैं।

उत्तर 14- D - *शंकर*

बाबा बच्चों से पूछते हैं शिवबाबा बोलते हैं, अच्छा शंकर बोलते हैं? ब्रह्मा बोलते हैं? विष्णु बोलते हैं? (किसी ने कहा शिव और ब्रह्मा बोलते हैं - विष्णु वा शंकर नहीं बोलते) विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण कहते हो तो फिर क्या बोलते नहीं हैं? गूँगे हैं? विष्णु, लक्ष्मी-नारायण बोलते हैं? *शंकर नहीं बोलते हैं - वह ठीक है।* बाकी तीनों क्यों नहीं बोलेंगे। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण हैं तो जरूर बोलेंगे ना। मनुष्य शिवबाबा के लिए समझते होंगे कि वह निराकार

कैसे बोलेंगे। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा भी इसमें आकर बोलते हैं। ब्रह्मा को भी बोलना होता है। एडाप्टेड हैं ना।

उत्तर 15- D - *84*

हमने स्वर्ग में आधाकल्प राज्य किया फिर *रावण का श्राप मिलने से उतरते हैं। उतरने में टाइम तो लगता है। 84 पौढ़ी (सीढ़ी) उतरनी पड़ती हैं।* चढ़ती कला में पौढ़ियाँ तो हैं नहीं, अगर पौढ़ियां हों तो सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कैसे कहा जाए? कहाँ तुमको 2500 वर्ष उतरने में लगते हैं और कहाँ तुम थोड़े ही वर्षों में चढ़ती कला में आ जाते हो।

उत्तर 16- C - *सर्वशक्तिमान*

बाप ही सर्वशक्तिमान् है। *इन लक्ष्मी-नारायण को भी कहेंगे सर्वशक्तिमान् क्योंकि सारे विश्व के मालिक हैं। *बाप ही पतित-पावन सर्वशक्तिमान् अथॉरिटी हैं, उनको वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है ।